एकता की मिसाल बनकर इतिहास में एक उज्ज्वल अध्याय जोड़ा है। मौजूदा दुनिया में लम्बे समय से क्रांतिकारी आंदोलन का संचालन करने वाली एक क्रांतिकारी पार्टी के रूप में मान्यता प्राप्त हमारी पार्टी के संस्थापक नेता, हमारे महान शिक्षक और शहीद कामरेड चारू मजुमदार और कामरेड कन्हाई चटर्जी की विरासत को जारी रखते हुए हजारों कामरेड अपने प्राणों को न्यौछावर कर रहे हैं। इस तरह के समृद्ध इतिहास की धनी हमारी पार्टी शहीद योद्धाओं के सपनों को साकार बनाकर रहेगी। भारत की नई जनवादी क्रांति को विजय–पथ पर आगे बढ़ाकर एक ऐसे समतामूलक समाज का निर्माण करके रहेगी जिसमें शोषण व उत्पीड़न के लिए कोई जगह न हो।

कामरेड कोटेश्वरलु के क्रांतिकारी जीवन को बयान करने का मतलब है महान नक्सलबाड़ी व श्रीकाकुलम के संघर्षों की धारावाहिकता में पिछले चार दशकों से जारी करीमनगर–आदिलाबाद, उत्तर तेलंगाना, दण्डकारण्य व पश्चिम बंगाल समेत समूचे भारत वर्ष के क्रांतिकारी आंदोलन का इतिहास बताना। उनकी सारी जीवन–यात्रा जन आंदोलनों के साथ चली। उनकी कलम वर्तमान इतिहास की व्याख्या करते हुए चली। उनकी वीरतापूर्ण मौत भारत के क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास में खून से अंकित हो गई है। उन्हें मौत नहीं है। सामंतवाद, दलाल नौकरशाह पूंजीवाद और साम्राज्यवाद से निश्चयपूर्वक लड़कर उन्हें कब्र में पहुंचाना ही इस वीर योद्धा के लिए सही श्रद्धांजलि होगी। आइए, शपथ लें कि विश्व सर्वहारा के इस उत्तम पुत्र के महान आदर्शों की पूर्ति के लिए आखिरी दम तक अपने संघर्ष को जारी रखेंगे। उनकी यादों से ऊर्जा हासिल करते हुए दुगुने उत्साह व बोल्शेविक संकल्प के साथ जनयुद्ध को तेज करेंगे। उनकी मौत से हमारी पार्टी व भारतीय क्रांति को हुई अपार क्षति की भरपाई करने के लिए जन आंदोलनों को तेज करेंगे और अनगिनत 'कोटेश्वरलु' पैदा करेंगे। जनता और जन आंदोलनों ने ही कोटेश्वरलु को पैदा किया था। आगे भी जनता और जन आंदोलन ही उन्हें बार–बार पैदा करते रहेंगे। शोषित जनता के दिलों में वे सदा के लिए अमर रहेंगे।

**1 जनवरी 2012**



## भारतीय क्रांति के महान नेता, शोषित जनता के प्यारे नेता व भाकपा (माओवादी) के पोलिटब्यूरो सदस्य

# कामरेड मल्लोझुला कोटेश्वरलु

## उर्फ रामजी उर्फ किशनजी को लाल–लाल जोहार!

**भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)**
**केन्द्रीय कमेटी**

# भारतीय क्रांति के महान नेता, शोषित जनता के प्यारे नेता व भाकपा (माओवादी) के पोलिटब्यूरो सदस्य

# कामरेड मल्लोझुला कोटेश्वरलु उर्फ रामजी उर्फ किशनजी को लाल–लाल जोहार!

“पश्चिम बंगाल राज्य के पश्चिमी मेदिनीपुर जिले के कुशबोनी के जंगलों में बुरिशोल गांव के पास सुरक्षा बलों और माओवादियों के बीच करीब एक घण्टे तक हुई घमासान लड़ाई में भाकपा (माओवादी) का अग्रणी नेता कोटेश्वर राव उर्फ किशनजी मारा गया” – शोषक शासकों ने ‘मुठभेड़’ की यह मनगढ़ंत कहानी फिर एक बार देशवासियों के सामने परोस दी। 24 नवम्बर 2011 को कथित रूप से शाम के 4.30 से 5.30 बजे के बीच हुई इस ‘मुठभेड़’ में मारा जाने वाला व्यक्ति संभवतः किशनजी हो सकता है, ऐसी आशंका जताते हुए ही केन्द्रीय गृह सचिव आर.के. सिंह ने एक ही सांस में काफी खुशी के साथ इसे ‘माओवादी पार्टी के लिए बहुत बड़ा झटका’ करार दिया। उससे एक रोज पहले एक कहानी जानबूझकर फैलाई गई थी कि जंगल महल के इलाके में सरकारी सशस्त्र बलों ने कामरेड किशनजी की घेराबंदी करने की कोशिश की थी जहां से वे बचकर भागने में सफल हो गए। 25 तारीख की सुबह फिर एक घोषणा की गई जिसमें मृत व्यक्ति की किशनजी के रूप में पहचान करने की बात कही गई। चिदम्बरम, आर.के. सिंह और सीआरपीएफ के महानिदेशक विजय कुमार ने मीडिया वालों को घटनास्थल पर जाने की अनुमति नहीं दी क्योंकि वे उनका शव दुनिया को दिखाने से डर रहे थे। मुठभेड़ में सिर्फ एक ही व्यक्ति का मारा जाना, किसी पुलिस वाले को खरोंच तक नहीं आना, आसपास के गांवों के लोगों के बयानों का सरकारी घोषणाओं से मेल नहीं खाना और खासकर उनके शव पर साफ–साफ दिखाई पड़ रहे अमानवीय यातनाओं के निशान – आदि तथ्यों के आधार पर मानवाधिकार



हुए अपना पद त्याग दिया था। उसके बाद राज्य कमेटी सचिवालय सदस्य के रूप में रहकर अपनी गलतियों से बाहर आकर उन्होंने फिर से सभी का विश्वास जीत लिया। पार्टी कमेटी की बैठकों में साथियों द्वारा जो भी आलोचना की जाती थी वे उसे गहराई से समझकर सुधारने की कोशिश करते थे। वे अपने साथियों से यह बताया करते थे कि गलतियां सभी करते हैं, पर कम्युनिस्टों की खूबी इस बात में है कि वे उन्हें चिन्हित करके सुधार लेते हैं। हर दिन घर–आंगन को साफ करना, मुंह धोना और बीमारियों से बचाव के लिए टीका लगवाना जितना सहज व जरूरी है, उतना ही कम्युनिस्टों के लिए आलोचना और आत्मालोचना। कामरेड कोटेश्वरलु ने इस बात पर न सिर्फ यकीन किया, बल्कि अपने व्यवहार में इसे प्रदर्शित भी किया।

### ‘एक योद्धा धराशायी होगा तो हजारों निकलेंगे उनकी राह पर’

अब कामरेड कोटेश्वरलु नहीं रहे। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उनकी मृत्यु से हम एक अनुभवी व वरिष्ठ साथी खो दिया। वे कैडरों के लिए एक स्नेहिल साथी थे। सैद्धांतिक, राजनीतिक व सांगठनिक क्षेत्रों में अपार अनुभव प्राप्त साथी थे। वे एक क्रांतिकारी कवि और लेखक थे। वे माओवादी जनयुद्ध के सैनिक व कमाण्डर थे जिन्होंने उठाई हुई बंदूक को कभी नीचे नहीं रखी। लगातार 38 सालों तक क्रांति की राह पर चलते हुए जन आंदोलनों और जनयुद्ध में उन्होंने कई मिसालें कायम कीं। वे एक ऐसे कम्युनिस्ट क्रांतिकारी थे जिन्होंने यह साबित कर दिखाया कि एक चिनगारी दावानल को पैदा कर सकती है। वे क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास में एक चमकते तारा बनकर रहेंगे और भावी पीढ़ियों को प्रेरणा देते रहेंगे।

चार दशकों तक अलग–अलग क्रांतिकारी धाराओं के रूप में चलकर 21 सितम्बर 2004 को भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) के रूप में एकजुट हुई हमारी पार्टी की महानता सच्ची क्रांतिकारी शक्तियों की एकता में है। भारत की कम्युनिस्ट पार्टी के 85 सालों के इतिहास में और महान नक्सलबाड़ी के बाद 45 सालों के इतिहास में पार्टी में कई बार फूटें आईं। अलग–अलग मौकों पर क्रांति के साथ गद्दारी करने वाले व्यक्ति और गुट इतिहास के कूड़ेदान में फेंक दिए गए। लेकिन हमारी पार्टी ने सच्चे क्रांतिकारियों की

आदि पत्रिकाओं को चलाने में उन्होंने सराहनीय योगदान दिया। सैद्धांतिक, राजनीतिक, सांगठनिक, सैनिक, सांस्कृतिक व सामाजिक मुद्दों पर उन्होंने अध्ययन कर सैकड़ों की संख्या में लेख लिखे थे। दण्डकारण्य में इलाके वार जनता की भाषाओं में पत्रिकाओं के संचालन पर वे जोर दिया करते थे। 1980 के दशक में हैदराबाद में 'पीस बुक सेंटर' के नाम से पार्टी की आंध्रप्रदेश राज्य कमेटी की ओर से किताबों की दुकान चलाने में भी उनका योगदान रहा।

कामरेड कोटेश्वरलु एक अच्छे वक्ता भी थे। किसी भी मुद्दे पर वे बेबाकी से अपनी बात रखा करते थे। वे जहां भी होते वहां की भाषा में बोलने की कोशिश करते थे। आंदोलन की जरूरतों के मुताबिक उन्होंने कोया, हिंदी, अंग्रेजी और बंग्ला भाषाएं सीख लीं। उनका भाषण श्रोताओं की समझदारी बढ़ाता था और उनके अंदर उत्साह का संचार करता था।

कामरेड कोटेश्वरलु ने 2007 से पार्टी की पूर्वी रीजनल ब्यूरो के प्रवक्ता के रूप में जिम्मेदारी निभाई। उसके बाद लालगढ़ आंदोलन की उभार के समय मीडिया के साथ नियमित रूप से संपर्क में रहकर उन्होंने कई मुद्दों पर पार्टी का रुख स्पष्ट किया। पत्रकारों के साथ वे दोस्ताना सम्बन्ध रखा करते थे।

## मार्क्सवादी शिक्षक के रूप में योगदान

कामरेड कोटेश्वरलु की मुख्य जिम्मेदारियों में से एक थी कैडरों को शिक्षित करना। शुरूआती दिनों से लेकर कैडरों को मार्क्सवादी शिक्षा देने के लिए राजनीतिक कक्षाएं चलाने में उनका खासा योगदान रहा। 1996 में केन्द्रीय राजनीतिक स्कूल व स्कोप की जिम्मेदारियां उठाने के बाद उन्होंने कई योजनाएं तैयार कीं ताकि नेतृत्वकारी कैडरों को सैद्धांतिक शिक्षा दी जा सके। वे जहां भी जाते तो चुने हुए विषयों पर नोट्स की तैयारी और कक्षाओं के आयोजन पर आवश्यक सुझाव दिया करते थे।

पार्टी के सैद्धांतिक व राजनीतिक मोर्चे में एक शिक्षक होने के साथ–साथ कामरेड कोटेश्वरलु भूलसुधार अभियान में अपनी गलतियां सुधारने में भी एक आदर्शवान कामरेड थे। 1984 में पार्टी की आंध्रप्रदेश शाखा में उत्पन्न छह बुराइयों को सुधारने के दौरान उन्होंने राज्य कमेटी के सचिव के रूप में अपनी ओर से हुई विफलताओं को चिन्हित कर ईमानदारी से आत्मालोचना पेश करते



संगठनों और अन्य जन संगठनों ने तुरंत ही इसका विरोध करते हुए बयान जारी किए। अपने बयानों में उन्होंने स्पष्ट किया कि यह मुठभेड़ में हुई मौत हो ही नहीं सकती, बल्कि उन्हें कहीं से जिंदा उठा लाकर निर्मम और गैर–कानूनी तरीके से कत्ल किया गया। साफ जाहिर है कि माओवादी आंदोलन को देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए सबसे बड़ा खतरा बताकर दुष्प्रचारित करने वाले शासक वर्ग और उनकी अगुवाई कर रहे सोनिया–मनमोहन सिंह–चिदम्बरम –प्रणब–जयराम रमेश के शासक गिरोह ने पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के साथ सांठगांठ कर बेहद षड़यंत्रकारी तरीके से किए गए कोवर्ट आपरेशन में कॉमरेड किशनजी को जिंदा पकड़कर अमानवीय यातनाएं देने के बाद उनकी हत्या कर दी।

पार्टी के कतारों और जनता के बीच कोटन्ना, प्रह्लाद, रामजी, किशनजी, बिमल आदि नामों से लोकप्रिय कॉमरेड मल्लोझुला कोटेश्वरलु महान नक्सलबाड़ी विद्रोह के बाद की पीढ़ी के अग्रणी प्रतिनिधि थे। महान नक्सलबाड़ी सशस्त्र किसान संघर्ष ने समूचे भारतीय समाज को झकझोर कर शोषित वर्गों व तबकों की तमाम जनता को जगा दिया। उसने भारत की अर्थव्यवस्था के चरित्र को निर्धारित किया। सशस्त्र संघर्ष को फिर से एजेण्डे पर ला दिया। उसने नई जनवादी क्रांति का रास्ता दिखा दिया जिसकी धुरी है सशस्त्र कृषि क्रांति। इस प्रकार भारत की मुक्ति के लिए 'नक्सलबाड़ी एक ही रास्ता' बन गया।

कामरेड कोटन्ना नक्सलबाड़ी व श्रीकाकुलम की राजनीति से प्रभावित हुए थे। खुद को करीमनगर–आदिलाबाद जिलों के किसान आंदोलन से जोड़कर उन्होंने 'जगित्याल विजयी यात्रा' के अगुवा नेताओं में से एक बनकर कट्टर सामंतवाद की कमर तोड़ दी। आंध्रप्रदेश सशस्त्र किसान क्रांतिकारी आंदोलन की अगुवाई करते हुए दण्डकारण्य में जन मुक्ति गुरिल्ला दस्तों को नेतृत्व प्रदान किया। केन्द्रीय कमेटी के सदस्य के रूप में वे उत्तर व पूर्व भारत में क्रांतिकारी आंदोलन के विस्तार का कार्यभार अपने कंधों पर लेकर पश्चिम बंगाल गए थे जहां की जनता को जनयुद्ध से जोड़कर ऐतिहासिक लालगढ़ जन विद्रोह के मार्गदर्शक के रूप में सुविख्यात हुए थे। वे ऐसे शख़्स थे जिन्होंने देश के संसाधनों को दलाल नौकरशाह पूंजीपतियों और विदेशी कार्पोरेट कम्पनियों के हाथों लुटवाने की शासक वर्गों की जन विरोधी नीतियों के खिलाफ जन आंदोलनों का निर्माण किया। क्रांतिकारी पार्टियों की एकता

की प्रक्रिया में और पार्टी की लाइन को विकसित करने में केन्द्रीय कमेटी व पोलिटब्यूरो सदस्य के रूप में उन्होंने सक्रिय भूमिका निभाई। पार्टी के प्रतिनिधि के रूप में भारतीय विस्तारवाद के खिलाफ दक्षिण एशिया के माओवादी क्रांतिकारियों के बीच एकता कायम करने में उनकी अहम भूमिका रही।

इसीलिए सामंती व दलाल पूंजीपति शासक वर्गों ने साम्राज्यवादियों के सम्पूर्ण सहयोग से कॉमरेड कोटेश्वरलु को खास तौर पर निशाना बनाकर हत्या का षड़यंत्र रच दिया। तेलंगाना से लेकर बंगाल तक अथक कूच करने वाले उनके पैरों को दुश्मन ने काट दिया। देश में नई जनवादी क्रांति को सफल बनाकर विश्व सर्वहारा समाजवादी क्रांति को विजय के मुकाम तक पहुंचाने का सपना देखने वाली उनकी आंखों में से एक को दुश्मन ने निकाल डाली। उनके शरीर को दुश्मन ने तोड़कर गोलियों से छलनी कर दिया। सिर से पांव तक कई किस्म के जख्म दिए। दुश्मन के फासीवादी चरित्र का निरंतर पर्दाफाश करने वाले उनके गले को दुश्मन ने क्रूरतापूर्वक कुचल दिया। जनता की मुक्ति की खातिर कलम को भी हथियार की तरह इस्तेमाल करने वाले उनके हाथ की उंगली को काट डाला। पांवों को हीटर पर जला दिया और संगीनों से गर्दन को काट दिया। शरीर को कई जगहों पर चीर दिया। हर पल 'इंकलाब जिंदाबाद' का नारा बुलंद रखने वाले उनके मुंह में गोली चला देने से जबड़े का निचला हिस्सा उड़ गया और पीछे से भेजा बाहर निकल आया। अपने खुद के संविधान का उल्लंघन करते हुए दुश्मन ने उन्हें किसी गोपनीय अड्डे में कई घंटों तक यातनाएं देकर कायरतापूर्ण हत्या कर दी। कामरेड किशनजी ने इन सबको सह लिया। वे एक अदम्य क्रांतिकारी थे जिन्होंने दुश्मन के सामने अपना सिर न झुकाते हुए पार्टी की गोपनीयता की अपने प्राणों से भी बढ़कर रक्षा की। वे एक योद्धा थे जिन्होंने अपनी मौत में भी दुश्मन को हरा दिया।

उनकी हत्या कर आज दुश्मन भले ही खुशियां मना रहा हो, हमारी पार्टी लाइन को जिससे वे निरंतर जुड़े रहे, उसके विकास के लिए उनके द्वारा किए गए सृजनात्मक कार्य को, उनके क्रांतिकारी अरमानों को, आदर्शों व सपनों को तथा जगित्याल से जंगलमहल तक फैली हुई उनकी स्मृतियों को मिटाना असंभव है। उनके आदर्शों की स्फूर्तिभावना से लड़ रही जन मुक्ति गुरिल्ला



में कमलापुर अधिवेशन में भाग लेकर वापस जाते समय वे गुरिल्लों की एक शादी के समारोह में शामिल हुए थे। उस शादी में उपस्थित ग्रामीणों की प्रतिक्रियाओं को सुनने के बाद उन्होंने जो कविता लिखी उसमें जनता और गुरिल्लों के बीच के रिश्ते की झलक मिलती है। वे जिस किसी भी बैठक में शामिल होते थे उसके अंदर होने वाली बहसों के सारांश को कविताओं में बांधना उनकी कलम का एक और खास गुण था। वे एक अच्छे आशुकवि थे। भाकपा (माओवादी) के आविर्भाव के मौके पर उन्होंने कई कविताएं सुनाकर सभी को उत्साहित किया। 2008 के आखिर में जब वे दण्डकारण्य से वापस जंगल महल इलाके में जा रहे थे, तब उन्होंने 'कांटा' के नाम से एक कविता लिखी थी जिससे यह पता चलता है कि वे विकसित हो रहे जन प्रतिरोधी संग्राम से कितने प्रभावित थे। वे साथियों को चिट्ठियां लिखते समय उसके अंदर कविताओं की पंक्तियां लिखा करते थे और सभी उन चिट्ठियों को खास अमानत की तरह हिफाजत से रख लेते थे। साथी हंसी–मजाक में उन्हें 'दो–दो हाथों से कविता लिखने वाले' कहा करते थे।

1984 में आंध्रप्रदेश में क्रांतिकारी लेखक संघ (विरसम्) द्वारा जन कलाओं पर आयोजित कार्यशाला के लिए उन्होंने जो सुझाव व विचार भेजे थे, उससे क्रांतिकारी लेखकों की जिम्मेदारियों को लेकर उनकी समझ स्पष्ट होती थी। उन्होंने हर जगह गुरिल्ला लेखकों को प्रोत्साहित किया। हालांकि वे कई नामों से कविता लिखा करते थे, लेकिन आखिरी दौर में 'असिधारा' को अपने अंदर के कवि का स्थाई नाम बना लिया। आज उनकी मृत्यु से हमने एक क्रांतिकारी कवि को भी खो दिया है।

पार्टी की ओर से की गई रचनाओं में भी उनका खासा योगदान रहा। विभिन्न मुद्दों पर तुरत–फुरत रचनाएं करना उनकी खासियत थी। पार्टी पत्रिकाओं के अलावा पूंजीवादी प्रिंट मीडिया में प्रकाशन के लिए भी वे अपनी रचनाएं भेजा करते थे। पार्टी और क्रांतिकारी आंदोलन के खिलाफ नकली क्रांतिकारियों और दुश्मन द्वारा किए जाने वाले हमले का वे मार्क्सवादी तर्क से परास्त करते थे। क्रांतिकारी पत्रिकाओं के संचालन में वे गंभीरता से शामिल होते थे। 'पत्रिका एक संगठक है' – लेनिन के इस कथन को वे जिंदगी भर महत्व देते रहे और बेहतर रचनाओं के साथ पत्रिकाओं के प्रकाशन पर हमेशा जोर देते रहे। क्रांति, रैडिकल मार्च, कार्मिक पथम्, प्रभात, वैनगॉर्ड, अवामी जंग

कार्यरत महिला गुरिल्ला साथियों को विशेष रूप से पोषक आहार देने का प्रस्ताव रखकर उसे कमेटी द्वारा मंजूरी दिलवाने में उनके विशाल नजरिए को समझा जा सकता है। क्रांतिकारी आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाते हुए उन्हें विशेष रूप से विकसित करने पर उन्होंने हमेशा जोर दिया।

कामरेड रामजी ने क्रांतिकारी आंदोलन में लम्बे समय से काम करने वाली महिला कामरेडों के साथ विभिन्न मुद्दों पर भेंटवार्ता कर उसे पार्टी की विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित करवाया। इससे संघर्ष में उनके अनुभवों को पाठकों तक ले जाने में तथा पार्टी में कार्यरत तमाम महिलाओं को प्रेरित करने में मदद मिली।

## कलम व आवाज भी उठाई दुश्मन के खिलाफ

कामरेड कोटेश्वरलु की खासियत यह थी कि वे जो भी लिखते या बोलते थे वह विचारगर्भित हुआ करता था। संवेदनशीलता, भावनात्मकता और अपने अविराम व अथक दैनिक कामकाज में अनगिनत दबावों को झेल सकने की बढ़िया क्षमता, जो उनकी कार्यपद्धति का हिस्सा थी, आदि के चलते उनकी कलम से जैसे कविताओं की धारा ही बहती थी। उन्होंने हर पल गतिशीलता व परिणामशीलता में जिया। वे हर काम में खुद को आगे रखते थे और अपने साथियों को भी इसी दिशा में प्रेरित करते थे। साथियों के प्रति उनका रुख यह रहता था कि उनके अंदर छिपी सारी क्षमताओं और रचनात्मकता को बाहर लाया जाए ताकि उनसे आंदोलन को आगे बढ़ाने में मदद मिल सके। खुद तो वे लिखते ही थे, साथ ही, साथियों से लिखवाना और उनकी रचनाओं की खामियों को दर्शाना उनकी एक और खासियत थी। खासतौर पर महिला कामरेडों को लेखकों के रूप में विकसित करने हेतु प्रोत्साहन देने के साथ–साथ उनकी रचनाओं पर अपने सुझाव वे जरूर देते थे। उनकी कविताओं की संख्या दर्जनों में होगी। उनकी कविताओं के अंदर हम अक्सर मांझी, नदी–नाले, तीर–धनुष, गोदावरी आदि उपमाओं के प्रयोग को देख सकते हैं।

करीमनगर में जब पुलिस ने कामरेड जापा लक्ष्मारेड्डी की निर्मम हत्या की थी तो उन्होंने 'एक बेटा' के नाम से एक लम्बी कविता लिखी थी जिसमें उन्होंने उनके साथ अपने गहरे रिश्ते को बयान किया। 1984 में दण्डकारण्य



सेना और जनता के दिलों से उन्हें खत्म करना नामुमकिन है। उनके आशय, सिद्धांत व आदर्श करोड़ों शोषित लोगों के दिलों में प्रज्ज्वलित हो रहे हैं। उनका लम्बा व अथक क्रांतिकारी कार्य रणनीतिक इलाकों में जनता की वैकल्पिक राजसत्ता के निर्माण के लिए, आधार इलाकों की स्थापना के लिए और अंततः भारत की मुक्ति के लिए प्रेरणा के स्रोत के रूप में रहेगा।

जनता, जनवादी बुद्धिजीवी, शहीदों के बंधु–मित्रों की कमेटी और उनके सगे–सम्बन्धी उनके शव को पूरे सम्मान के साथ जंगलमहल से पेद्दापल्ली तक ले गए जहां शहीद योद्धा का अंतिम संस्कार किया गया। उनकी अंतिम यात्रा में भाग लेने के लिए हजारों क्रांतिकारी जनता पुलिस के घेराव को तोड़कर चली आई। लोगों ने अपने प्यारे नेता को अश्रुपूर्ण विदाई दी। केन्द्र व राज्य सरकारों की इस हत्यारी करतूत का खण्डन किया और 'इंकलाब जिंदाबाद' व 'कामरेड कोटन्ना अमर रहे' के नारे लगाए। पुत्र–शोक से दुखी होकर भी अपने बेटे के रास्ते पर चलने का आह्वान कर रही मां मधुरम्मा, अन्य परिवार सदस्यों, सगे–सम्बन्धियों के प्रति केन्द्रीय कमेटी गहरी संवेदना प्रकट करती है। उनकी शहादत से शोक में डूबे हुए पार्टी कतारों, क्रांतिकारी जनता व उनके तमाम दोस्तों के दुख को बांटते हुए उनके अधूरे मकसद को पूरा करने हेतु संघर्ष को आखिर तक जारी रखने का संकल्प लेती है।

## देशभक्ति और प्रगतिशील विचारों से गुंथा बचपन

कामरेड मल्लोझुला कोटेश्वरलु का जन्म 26 नवम्बर 1954 को करीमनगर जिले के पेद्दापल्ली कस्बे में हुआ था। मां मधुरम्मा और पिता वेंकटैया के तीन बेटों में वे मंझले थे। उनका बचपन पेद्दापल्ली में ही बीता जहां से उन्होंने हाई स्कूल की पढ़ाई पूरी की। बचपन से ही उनके अंदर देशभक्ति के विचार कूट–कूटकर भरे हुए थे। वे देश की रक्षा के लिए एक सैनिक बनने का सपना देखते थे। देशभक्तिपूर्ण विचारों ने उन्हें कुछ समय के लिए आरएसएस की ओर आकर्षित किया था। खाकी रंग का हाफ पैंट पहनकर वे संघ की शाखाओं में रोज जाया करते थे। लेकिन उसकी धर्मोन्मादी राजनीति व ढोंगी देशभक्ति को समझने के बाद वे उससे दूर हो गए। हाईस्कूल में पढ़ाई के दौरान उन्होंने एनसीसी में रहकर हथियार प्रशिक्षण हासिल किया। वे बचपन से ही शारीरक दृढ़ता पर विशेष ध्यान दिया करते थे। नियमित रूप से व्यायाम

करते थे।

पिता जनवादी व विवेकशील विचारों वाले शख़्स थे। पहले की तीन संतानों को खो चुकी मां ने बचे हुए तीन बेटों को प्यार से पाल–पोसकर बड़ा किया। देश की आजादी की लड़ाई में अपनी जवान उम्र के साथ–साथ सारी सम्पत्तियां खपाने वाले पति के खिलाफ उन्होंने न सिर्फ एक शब्द तक नहीं कहा, बल्कि हर दुख–तकलीफ को बांट लिया। बच्चों की परवरिश की खातिर परिवार ने जो मुश्किलें उठाईं; उसका असर कॉमरेड कोटन्ना पर पड़ा था। बुढ़ापे में पिता का केशोराम सिमेंट कम्पनी में गुमाश्ते की नौकरी पर लग जाना, उसमें रामाराव जैसे सामंती सरदारों का रोब–दाब चुपचाप सहने की उनकी मजबूरी; आखिरकार उस अधिकारी द्वारा निर्दयता से उन्हें नौकरी से हटा देना आदि मुश्किलें वे कभी नहीं भूलते थे। ऐसी मुश्किल स्थिति में उनकी मां खेतों में घूम–घूमकर घास काट लाकर भैंसों को खिलाती थीं और दूध दुहकर बच्चों का पेट काटकर दूध व दही बेचती थीं। इस तरह इकट्ठे किए गए पैसों से उन्हें पढ़ाने के लिए खूब मेहनत करती थीं। यह सब उनके दिमाग में हमेशा रहता था। कामरेड कोटेश्वरलु घर पर अक्सर खेती के कामों में हाथ बंटाते थे और किसान–मजदूरों से जातिगत बंधनों से परे दोस्ती करते थे। उनका बचपन पूरा मुश्किल स्थितियों से गुजरा। जातिगत बंधनों के बीच ही सही, उन्हें प्रगतिशील विचारों का आसरा मिला।

## नौजवानी के साथ ही
## राजनीतिक क्षेत्र की दहलीज पर कदम

पिता के गांधीवादी होने से और घर में सभी पार्टियों के लोगों से, खासकर कम्युनिस्टों से चलने वाली बहसों से राजनीतिक माहौल निर्मित होता था जिससे उनके अंदर प्रगतिशील विचार पैदा हुए थे। निज़ाम सरकार के रज़ाकारों के अत्याचारों के बारे में सुनने से बच्चों का खून खौल जाता था। बच्चे उन बहसों को गौर से सुना करते थे। चूंकि घर में गांव के ग्रंथालय से प्रगतिशील लेखकों की किताबें लाने का प्रचलन था, इसलिए बच्चों को ऐसे साहित्य से लगाव बढ़ा था। पितृसत्ता, सामंती मूल्य, सामाजिक असमानताएं, बुरी आदतें, बुराइयां आदि के प्रति नफरत की भावना बढ़ाते हुए कोटन्ना के विचार प्रगतिशीलता की ओर बढ़ते रहे। ईमानदारी, दूसरों के प्रति सम्मानपूर्वक



आंदोलन में भागीदार बनाने के लिए विशेष प्रयास किया। अपने साथ अपने भाई को भी क्रांतिकारी गतिविधियों में शामिल कर उन्हें एक कार्यकर्ता व नेता के रूप में विकसित करने में कामरेड रामजी ने जिस तरह प्रोत्साहित किया और सहयोग दिया, वह एक आदर्श मिसाल है। 1984 में पार्टी में पूर्णकालीन कार्यकर्ता के रूप में काम करने वाली एक साथी के साथ उनका विवाह हुआ। कामरेड रामजी ने उनकी काफी मदद की और प्रोत्साहन दिया ताकि वे क्रांतिकारी आंदोलन में एक महत्वपूर्ण नेता के रूप में उभर सकें। अपनी–अपनी जिम्मेदारियों के अनुसार वे एक दूसरे से दूर रहते थे और दुश्मन के क्रूर हमलों के बीच उन्हें सालों तक मिलने का मौका नहीं मिलता था। इन दोनों की आदर्शपूर्ण जोड़ी ने क्रांति के हितों को ही हमेशा सर्वोपरि रखा। अपनी मां को उन्होंने अखबारों के माध्यम से जो चिट्ठियां लिखीं उससे उन्होंने ऐसी तमाम माताओं को क्रांति का पैगाम भेजने की कोशिश की। यह उनके अंदर मानवीय स्पर्श का परिचायक था।

वे हमेशा एक बात की याद दिलाते थेः ''...हमारा संगठन एक पारिवारिक टोली नहीं है। करीबी दोस्तों का गुट नहीं है। यह सर्वहारा का राजनीतिक पार्टी है। हम इसकी इजाजत बिलकुल नहीं देंगे कि अपने सांझे उद्देश्यों पर व्यक्तिगत दोस्ती हावी हो जाए।''

## महिला कामरेडों की पक्षधरता करने वाले आदर्श नेता

शोषित जनता की पक्षधरता ने ही कामरेड कोटेश्वरलु को क्रांतिकारी आंदोलन की ओर खींच लाया था। उनकी सैद्धांतिक समझदारी यह थी कि इस शोषणमूलक समाज में पुरुषों की तुलना में महिलाएं उत्पीड़न का अतिरिक्त बोझ उठा रही हैं और शोषण–उत्पीड़न की समाप्ति के साथ ही उनकी मुक्ति जुड़ी हुई है। वे इस बात पर जोर देते थे कि शोषण व उत्पीड़न के खिलाफ बगावत का झण्डा बुलंद रखने वाली महिलाओं को अपने दैनिक कार्याचरण में पितृसत्ता के खिलाफ सचेतनपूर्वक संघर्ष करना चाहिए। पार्टी में महिलाओं की समस्याओं पर 1991 में दण्डकारण्य फारेस्ट कमेटी की ओर से जारी पत्र का प्रारूप उन्होंने ही बनाया था जोकि हमेशा पढ़ने योग्य है। पितृसत्तात्मक दमन व भेदभाव का शिकार होने के कारण महिलाओं में होने वाली अल्परक्तता और शारीरक कमजोरी को ध्यान में रखते हुए दस्तों में

किस्मों के प्रतिक्रियावादी सिद्धांतों का दृढ़ता से मुकाबला किया। इस क्रम में पार्टी के तमाम दस्तावेजों, खासकर 'भारतीय क्रांति की रणनीति–कार्यनीति' को समृद्ध बनाने में उनका विशेष योगदान रहा।

## एक स्नेहिल व प्रेमवत साथी

कामरेड रामजी पार्टी कतारों के लिए न सिर्फ एक नेता थे, बल्कि स्नेह व प्यार बांटने वाले साथी भी थे। वे हर उम्र और हर किस्म की सामाजिक पृष्ठभूमि वाले साथियों से, महिला–पुरुष सभी से आसानी से घुलमिल जाते थे। वे जहां भी जाते, तो तहेदिल से प्रेम बांटना उनकी विशिष्टता थी। अपने 38 सालों की क्रांतिकारी जिंदगी में उन्होंने हजारों पार्टी कैडरों के साथ घनिष्ठ मित्रता कायम की। कैडरों की जरूरतों को वे न सिर्फ समझते थे, बल्कि याद से उन्हें पूरा करने की कोशिश भी करते थे। अपने साथियों की खूबियों को भली भांति समझते हुए वे जहां भी रहें उनके लिए आवश्यक साहित्य आदि जिम्मेदारी से पहुंचाया करते थे। जब भी मौका मिले तो कामरेडों से मुलाकात जरूर करते थे। गुरिल्ला साथियों से बातचीत कर जनयुद्ध में उनके अनुभवों और क्रांतिकारी जन कमेटी के कामकाज के बारे में गहरी जानकारी हासिल करते थे। उनसे मिलकर हर साथी को यह महसूस होता था कि वे अपने एक चहेते राजनीतिक शिक्षक से मिल रहे हैं। साथियों को आवश्यक विषयों की जानकारी देने के साथ–साथ उनकी खामियों को दूर करने और उनकी खूबियों को नजर में रखते हुए प्रोत्साहित करने में वे ध्यान दिया करते थे। जब भी किसी से मिलना संभव नहीं होता तो उन्हें वे चिट्ठियां जरूर लिखते थे।

क्रांतिकारी युद्ध में घायल होने वाले साथियों के इलाज के लिए भी वे हमेशा विशेष ध्यान दिया करते थे। उनकी शारीरक स्थिति के मुताबिक काम देकर उनमें आत्मविश्वास जगाते थे। इस क्रूर लड़ाई में अपने जीवनसाथियों को खोने वाले साथियों का ढाढ़स बंधाते हुए क्रांतिकारी आंदोलन में मजबूती से आगे बढ़ने में उनकी सहायता करते थे। आंदोलन के दौरान उत्पन्न विभिन्न किस्म की समस्याओं से घिरे कामरेडों को कोटन्ना की याद जरूर आती है। कई कामरेड उनके द्वारा लिखे गए खतों को कई बार पढ़कर अपने अंदर क्रांतिकारी स्फूर्तिभावना को बढ़ा लेते हैं।

पार्टी में भर्ती होने के बाद उन्होंने अपने कई करीबियों को भी क्रांतिकारी



व्यवहार आदि सामाजिक मूल्यों को कोटन्ना ने अपने माता–पिता से सीख लिया। कोटन्ना एचएससी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए थे। उन्हीं दिनों में वे 40 दिनों तक टाईफाइड की बीमारी से ग्रसित हुए थे जिससे उनका एक कान हमेशा के लिए जवाब दे गया।

वह 1969 का साल था। वे वो दिन थे जब 'बसंत का वज्रनाद', यानी महान नक्सलबाड़ी की गूंज चारों ओर सुनाई दे रही थी। ठीक उसी समय तेलंगाना में एक और चिंगारी फूट पड़ी। पृथक राज्य की मांग से लोग संघर्ष के रास्ते पर निकल पड़े थे। इस संघर्ष की आंच से सबसे पहले छात्र जगत् प्रभावित हुआ। उसके बाद मजदूर और कर्मचारी इसमें जुड़ गए थे। करीब 400 नौजवानों ने उस समय के आंदोलन में अपने अनमोल प्राणों को न्यौछावर किया। हमारी पार्टी ने इस आंदोलन का शुरू से ही समर्थन करते हुए उसमें भाग लिया। जहां हमारी ताकत थी, वहां पर पार्टी ने जनता को संगठित कर नेतृत्व प्रदान किया। उस आंदोलन में भाग लेने वाले नौजवानों में कोटेश्वरलु भी एक थे। हालांकि उस समय तक वे पार्टी के संपर्क में नहीं आए थे। उन्होंने कई जुझारू कार्रवाइयों में भाग लिया। पृथक तेलंगाना की संघर्षशील राजनीति ही कामरेड कोटन्ना को धीरे–धीरे नक्सलबाड़ी की क्रांतिकारी राजनीति की ओर ले आई।

## प्रेरणादायक क्रांतिकारी जीवन के शुरूआती दिन

कामरेड कोटन्ना ने करीमनगर के एसआरआर कालेज में पी.यू.सी. (पूर्व स्नातक) कोर्स में दाखिला लिया था। तब तक नक्सलबाड़ी व श्रीकाकुलम का क्रांतिकारी संदेश उस कालेज तक पहुंच चुका था। वहीं पर कोटन्ना को क्रांतिकारी राजनीति से परिचय मिल गया जहां उन्होंने युवा क्रांतिकारियों की एक टोली में शामिल हो गए। पी.यू.सी. की पढ़ाई खत्म होने के बाद उन्होंने बी.एससी. (गणित) की पढ़ाई शुरू की। तब तक उनका घर कई क्रांतिकारियों के लिए आश्रयस्थली व क्रांतिकारी गतिविधियों के केन्द्र में तब्दील हो चुका था।

1972 तक नक्सलबाड़ी–श्रीकाकुलम का क्रांतिकारी उफान उतार पर पहुंच चुका था। हमारी पार्टी के संस्थापक नेताओं में से एक कामरेड चारू मजुमदार एक गद्दार की सूचना पर दुश्मन के हाथों में पड़ गए। 12 दिनों तक

दुश्मन द्वारा दी गई यातनाओं का सामना करने के बाद शहीद होकर भारत की नई जनवादी क्रांति के पथ–प्रदर्शक के रूप में इतिहास में अंकित हो गए। 1969–72 के बीच कामरेड्स सरोज दत्ता, पंचादि कृष्णमूर्ति, वेंपटापु सत्यम, आदिभट्ला कैलासम, डाक्टर देविनेनि मल्लिकार्जुन, डाक्टर चागंटि भास्कर, तामाड़ा गणपति, निर्मला, अंकम्मा, सरस्वती जैसे कई नेताओं, कार्यकर्ताओं व वीरांगनाओं ने दुश्मन के फासीवादी हमलों में अपनी जानें कुरबान कीं।

नक्सलबाड़ी के पीछे कदम के बाद पार्टी में गद्दार व क्रांति–द्रोही हावी हो चले थे। वाम व दक्षिणपंथी अवसरवादियों के चलते पार्टी में कई फूटें पड़ीं। हालांकि चंद ईमानदार क्रांतिकारियों ने आंध्रप्रदेश राज्य कमेटी के नेतृत्व में वाम व दक्षिणपंथी अवसरवाद के खिलाफ सैद्धांतिक संघर्ष चलाकर 'अतीत का मूल्यांकन करते हुए सशस्त्र संघर्ष को आगे बढ़ाएंगे' (आत्मालोचना रिपोर्ट – एससीआर) के आधार पर क्रांतिकारी ताकतों को दोबारा एकजुट करने की कोशिशें जारी रखीं। इन कोशिशों के फलस्वरूप क्रांतिकारी जन संगठनों के निर्माण के रास्ते खुल गए। पहले लेखक संगठन और बाद में क्रांतिकारी छात्र संगठन का निर्माण हुआ। नागरिक अधिकार संगठन के निर्माण को प्रोत्साहित किया गया।

इस दौरान क्रांतिकारी पार्टी और साहित्यिक मित्रों के साथ कामरेड कोटन्ना के सम्बन्ध मजबूत हो गए। उन्होंने अपने सहपाठियों से मिलकर कई जुझारू क्रियाकलापों में भाग लिया। 1973 में 15 अगस्त के दिन झूठी आजादी के आयोजन का विरोध करते हुए उन्होंने अपने कालेज में पहली बार एक कार्यक्रम लेकर तिरंगे झण्डे को जला दिया। इस कार्रवाई ने पूरे जिले में छात्र जगत् में सनसनी फैला दी। इस दरमियान वे गिरफ्तार किए गए थे। कामरेड कोटेश्वरलु के अथक क्रांतिकारी प्रस्थान में यह पहली गिरफ्तारी थी।

## क्रांतिकारी प्रस्थान का अनवरत सिलसिला

कामरेड कोटेश्वरलु जब बी.एससी. के आखिरी वर्ष में थे, तब उन्होंने प्रगतिशील व जनवादी छात्रों की गतिविधियों को जिला भर में फैलाना शुरू किया। जिले में मंथनी व पेद्दापल्ली के जूनियर कालेज और जम्मिकुंटा स्थित आदर्श स्नातक कालेज क्रांतिकारी छात्रों के केन्द्र बन गए। तब तक वरंगल के साहित्यिक मित्रों के साथ उनका रिश्ता घनिष्ठ बन चुका था। करीमनगर



मुक्ति के लिए जंगल महल में अपना खून बहाया। कामरेड कोटेश्वरलु ने उन तमाम शहीदों की राह पर चलते हुए अपना खून बहाया।

## आंतरिक संघर्षों में दृढ़ता से खड़े क्रांतिकारी योद्धा

पार्टी में विभिन्न मौकों पर उत्पन्न अंदरूनी संघर्षों में कामरेड कोटेश्वरलु ने क्रांतिकारी लाइन को दृढ़ता से थामे रखकर दक्षिण व वामपंथी अवसरवादियों और विघटनकारियों का मजबूती से विरोध किया। पार्टी की लाइन पर रंग–बिरंगे संशोधनवादियों और अवसरवादियों के हमलों का उन्होंने एक सैद्धांतिक योद्धा की तरह मुकाबला किया। 1985 में पुरानी पीपुल्सवार पार्टी में के.जी. सत्यमूर्ति आदि अवसरवादियों द्वारा पैदा किए गए आंतरिक संकट का सामना करने और समूची पार्टी को क्रांतिकारी लाइन पर दृढ़ता से बनाए रखने के लिए उन्होंने अथक प्रयास किए। 1991 में पार्टी के तत्कालीन सचिव कोण्डापल्ली सीतारामैया जब खुद ही अवसरवाद का शिकार होकर एक बार फिर संकट का कारण बने थे, तब भी कामरेड कोटन्ना क्रांतिकारी पक्ष में दृढ़ता से खड़े रहे। इस आंतरिक संघर्ष के फलस्वरूप के.एस. समेत बण्डैया, प्रसाद आदि अवसरवादियों को पार्टी से बहिष्कार कर युवा नेतृत्व उभरकर सामने आया। 1980 के दशक में आंध्रप्रदेश में दक्षिणपंथी अवसरवादियों और पश्चिम बंगाल में नव संशोधनवादियों के खिलाफ हुए सैद्धांतिक–राजनीतिक संघर्षों में तथा 2002 में पश्चिम बंगाल राज्य कमेटी के तत्कालीन सचिव माणिक द्वारा सामने लाई गई अवसरवादी राजनीति को हराने में कामरेड कोटन्ना ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पार्टी की पश्चिम बंगाल राज्य इकाई में उत्पन्न विभिन्न समस्याओं पर प्लेनमों का आयोजन कर उन्हें हल करने का प्रयास किया। इन सैद्धांतिक संघर्षों के दौरान दस्तावेजों और किताबें लिखने में तथा विभिन्न पत्रिकाओं में बहसें चलाने में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। 2004 में दो पार्टियों के विलय के बाद पश्चिम बंगाल में पुरानी दो पर्टियों से आए पार्टी कतारों के बीच मजबूत एकता कायम करने में उन्होंने खासा योगदान दिया। कुल मिलाकर कहा जाए, तो विचारधारा, सिद्धांत और राजनीति से सम्बन्धित मामलों में मजबूत पकड़ रखते हुए, निरंतर अध्ययन जारी रखते हुए पार्टी की लाइन को विकसित करने और उसकी रक्षा करने में कामरेड कोटन्ना ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे एक मार्क्सवादी सैद्धांतिक योद्धा थे जिन्होंने सभी

दुश्मन की हर रणनीति और हर दावपेंच का मुंहतोड़ जवाब देने में खासा अनुभव प्राप्त कामरेड कोटेश्वरलु ने इन हमलों के खिलाफ भी कार्यनीति तैयार की। गांवों में डेरा डाले हुए हर्मद के गुण्डों को दण्डित करने, दुश्मन के रंग–बिरंगे जासूसों का जनता में पर्दाफाश करते हुए गुनाह के मुताबिक सजा देने, गांवों पर हमला करने वाले पुलिस व अर्धसैनिक बलों का सशस्त्र प्रतिरोध करने, सिल्दा की तर्ज पर दुश्मन के शिविरों पर हमले करने आदि फैसले लिए गए। चूंकि दुश्मन हमें उसी इलाके तक सीमित करने की कोशिश कर रहा है, इसलिए हमें दूसरे इलाकों में आंदोलन को फैलाकर दुश्मन का बाहर से घेराव करना चाहिए, इस योजना से लालगढ़, रामगढ़, धर्मपुरी, कोतवाली, मधुपुर, पालाईबनी, ग्वालतोर, सरेंगा, बिनपुर, झारग्राम, लोधाशुली, गोपिबल्लभपुर, नयाग्राम, संक्रेइल आदि इलाकों में आंदोलन का विस्तार किया गया। दुश्मनों के बीच पनपने वाले अंदरूनी अंतरविरोधों का सही तरीके से इस्तेमाल करने पर भी उनका ध्यान रहा। दुश्मन के दुष्प्रचार युद्ध को क्रांतिकारी प्रचार युद्ध से टक्कर देने पर उनका हमेशा जोर रहा। क्रांतिकारी प्रचार के लिए पूंजीवादी मीडिया का भी इस्तेमाल करते हुए क्रांतिकारी पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन को बढ़ाने पर वे जोर देते रहे। 1980 के दशक के शुरूआती सालों में आंध्रप्रदेश राज्य कमेटी की अगुवाई में गठित 'एजिटेशन एण्ड प्रापेगण्डा कमेटी' (एपीसी – आंदोलन व प्रचार कमेटी) के वे प्रभारी रहे थे। तबसे लेकर आखिर तक उन्होंने प्रचार युद्ध को समुचित महत्व देकर उस मोर्चे को सृजनात्मक ढंग से संभाला। क्रांतिकारियों के लिए खुद के प्रसार साधानों की जरूरत को महसूस करके हमारे गुरिल्ला जोनों में उन्हें जुटा लेने पर बल दिया। दुश्मन के चौतरफा हमले का जवाब बहुमुखी प्रतिरोध के जरिए ही दिया जा सकता है, ऐसा हमेशा उनका कहना रहा।

लालगढ़ आंदोलन के दौरान दुश्मन के खिलाफ कई वीरतापूर्ण कार्रवाइयां की गईं जिसमें 70 से ज्यादा सशस्त्र बलों का सफाया किया गया और 50 अन्य को घायल किया गया। उनसे 82 हथियार जब्त कर लिए गए। इन प्रतिरोधी कार्रवाइयों का नेतृत्व करने वाले कामरेड्स उमाकांत महतो, शशधर महतो, सिद्धू–कानू मिलिशिया के सुप्रीम कमाण्डर द्वितीय सिद्धू सोरेन तथा जन आंदोलन के नेता लालमोहन टुडू समेत 160 क्रांतिकारियों ने धरती मां की



शहर को केन्द्र बनाकर क्रांतिकारी साहित्यिक कार्यक्रम तेज हो गए। कई क्रांतिकारी कविताओं के संग्रह प्रकाशित हुए। जिले में नागरिक अधिकार संगठन का निर्माण हुआ। जिले के प्रगतिशील व क्रांतिकारी बुद्धिजीवियों, वकीलों और महान तेलंगाना संघर्ष की पीढ़ी के ईमानदार कम्युनिस्टों के साथ कामरेड कोटेश्वरलु ने व्यापक सम्बन्ध स्थापित किए। घर पर कई क्रांतिकारी साहित्यिक व राजनीतिक पत्रिकाएं आनी शुरू हो गईं। मक्सीम गोर्की का उपन्यास 'मां' उन्हें खूब भाया जिसे उन्होंने अपनी मां से भी पढ़वाया था। उस समय युवा पीढ़ी पर न सिर्फ नक्सलबाड़ी–श्रीकाकुलम, बल्कि वियत्नामी क्रांति व महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति का भी प्रभाव खूब था। उस पीढ़ी के एक सक्रिय प्रतिनिधि थे कामरेड कोटेश्वरलु।

1974 में धार्मिक कट्टरपंथी ताकतों ने उस्मानिया विश्वविद्यालय के छात्र कॉमरेड जॉर्ज रेड्डी की जघन्य हत्या की। उनकी कुरबानी तमाम क्रांतिकारी छात्रों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी थी। अक्टूबर 1974 में रैडिकल छात्र संगठन (आर.एस.यू.) का निर्माण हुआ। 23–24 फरवरी 1975 में हैदराबाद में आंध्रप्रदेश रैडिकल छात्र संगठन का पहला अधिवेशन सम्पन्न हुआ। इसे सफल बनाने के लिए कोटेश्वरलु ने जिले से कई छात्रों को गोलबंद किया।

आदिलाबाद जिले के क्रांतिकारी हमदर्द कामरेड भूमैया और कामरेड किष्टागौड को सुनाई गई फांसी की सजाओं को रद्द करने की मांग से रैडिकल छात्र संगठन समेत दूसरे क्रांतिकारी व प्रगतिशील छात्र संगठनों, मानवाधिकार संगठनों, पत्तिपाटि वेंकटेश्वरलु, के.जी. कन्नबीरन जैसे प्रमुख वकीलों समेत कई बुद्धिजीवियों ने व्यापक आंदोलन छेड़ दिया। इसमें कामरेड कोटेश्वरलु ने सक्रिय रूप से भाग लिया। इस विरोध की परवाह न करते हुए शासकों ने आपातकाल के अंधेरे दिनों में 1 दिसम्बर 1975 की मध्य रात्री में उन्हें बेरहमी के साथ फांसी पर चढ़ा दिया।

26 जून 1975 को आपातकाल लागू किए जाने से पूरा देश एक जेल में तब्दील हो गया। करीमनगर, आदिलाबाद व वरंगल जिलों से काफी संख्या में क्रांतिकारी पार्टियों के कार्यकर्ता और नेता भूमिगत हो गए। पुलिस द्वारा गिरफ्तार होकर कई लोग कई किस्म की यातनाओं का शिकार बने और जेल की सलाखों के पीछे धकेल दिए गए। वरंगल के रीजनल इंजिनीरिंग कालेज

का छात्र कामरेड सूरपनेनि जनार्दन समेत मुरलीमोहन, आनंदराव और सुधाकर को पुलिस ने गिरायपल्ली के जंगलों में फर्जी मुठभेड़ में मार दिया। कई क्रांतिकारी लेखक, कवि, कलाकार, जनवादी बुद्धिजीवी और वकील जेलों में डाल दिए गए। नक्सलबाड़ी की अस्थाई पराजय के बाद भूमिगत होने वाले नौजवानों के लिए वह वाकई परीक्षा की घड़ी थी। उन दिनों की कठिन परिस्थितियों ने उनके क्रांतिकारी संकल्प की परीक्षा ली। ऐसे कठिन हालात से गुजरने वालों में कामरेड कोटेश्वरलु भी एक थे।

20 महीनों के आपातकाल के अंधेरे दौर में पार्टी कार्यकर्ताओं ने भूमिगत होकर शिक्षकों, देहाती डाक्टर या धोबी के रूप में काम किया ताकि जनता के बीच रहते हुए जनाधार को बढ़ाया जा सके। दमन के चलते पार्टी के साथ उनका नियमित संपर्क नहीं रह पाता था। आर्थिक रूप से उन्हें कई दिक्कतों का सामना करना पड़ता था। क्रांति की जरूरतों के लिए घड़ी, साइकल जैसी अपनी निजी चीजें बेचने या गिरवी रखने पर मजबूर होना पड़ता था। क्रांति के हमदर्दों द्वारा प्राप्त या उधार पर लिए गए थोड़े से पैसों से खर्चे चलाने पड़ते थे। उनकी मौजूदगी का कहीं से भी पता लगता तो जान को खतरा रहता था। रूस में स्तोलिपिन के दिनों वाले दमन से इसकी तुलना की जा सकती थी। उनके राजनीतिक संकल्प, प्रतिबद्धता, अध्ययन, आशयों के प्रति समर्पण व कुरबानी की भावना आदि आज की पीढ़ियों के लिए प्रेरणा के रूप में रहेंगे। ऐसे हालात में जनवरी 1977 में पार्टी की तेलंगाना रीजनल अधिवेशन कामयाबी के साथ सम्पन्न हुआ। 1974 में सीओसी द्वारा तैयार किए गए 'क्रांति का रास्ता' दस्तावेज का इस अधिवेशन ने अनुमोदन किया। वामपंथी दुस्साहसवादी कार्यनीति की समीक्षा कर उससे बाहर आते हुए जनदिशा पर खड़े होकर सही कार्यनीति के साथ व्यवहार में उतरने के रास्ते में यह अधिवेशन एक मील का पत्थर साबित हुआ। इस दिशा पर चलते हुए आपातकाल के अंधेरे दिनों में ही पार्टी कार्यकर्ताओं ने ग्रामीण इलाकों में संगठकों के रूप में काम करना शुरू किया। उस समय कामरेड कोटेश्वरलु को सिरिसिल्ला तहसील के मरिमड्ला इलाके में सांगठनिक जिम्मेदारी दी गई। उस फासीवादी दमन के खिलाफ देश भर में जनता का आक्रोश भड़क उठा तो मार्च 1977 में इंदिरा गांधी को आपातकाल हटाना पड़ा।



मार्गदर्शन दिया। जन संघर्ष में शामिल सैकड़ों लोग सिद्धू–कानू जन मिलिशिया और पीएलजीए में शामिल हो गए।

लालगढ़ में उभरे संघर्ष को कुछ ही समय के अंदर सुवर्णमुखी नदी के किनारे तक और गोपिबल्लभपुर जिले की सरहद तक फैलाया गया जोकि 1970 के दशक में क्रांतिकारी संघर्ष के गढ़ हुआ करते थे। नक्सलबाड़ी के वारिस के रूप में सुविख्यात हुए लालगढ़ जन विद्रोह के समर्थन में न सिर्फ कोलकाता में, बल्कि दिल्ली, मुम्बई, बंगलूरु, हैदराबाद समेत कई शहरों में छात्रों, बुद्धिजीवियों, कलाकारों, लेखकों, कवियों, जनवादियों और आदिवासियों के तमाम हितैषियों की गोलबंदी हुई। पूर्वोत्तर के राज्यों की संग्रामी जनता भी लालगढ़ से प्रेरित हुई। लालगढ़ जन संघर्ष के समर्थन में देश भर में जन कमेटियों का निर्माण हुआ। इस पूरे क्रम में कामरेड कोटेश्वरलु ने अपने हिस्से का योगदान दिया।

लालगढ़ जन विद्रोह का उन्मूलन करने के लिए हर्मद बाहिनी, केन्द्र व राज्य के सशस्त्र बलों और कोबरा जैसे विशेष कमाण्डो बलों ने जंगलों और गांवों में एक भारी दमनात्मक अभियान छेड़ दिया। जनता के आने–जाने पर पाबंदियां लगाई गईं। वाहनों के आवागमन को नियंत्रित किया गया। रेल पटरियों को उखाड़ देने, भारी साजिश के तहत ज्ञानेश्वरी एक्सप्रेस हादसा करवाकर बेकसूर मुसाफिरों की जान लेने जैसी काली करतूतों को सीपीएम ने अंजाम दिया। दूसरी ओर कार्पोरेट मीडिया के जरिए क्रांतिकारी आंदोलन के खिलाफ जहर उगलते हुए दुष्प्रचार मुहिम चलाई। आत्मसमर्पण की योजना, गांव–गांव में मुखबिरों का नेटवर्क, कोवर्टों के जरिए नेतृत्व की हत्या करवाने की कोशिशें आदि तमाम साजिशें रची गईं। खासकर केन्द्रीय गृहमंत्री चिदम्बरम और गृह सचिव जी.के. पिल्लई ने कई साजिशें रचीं ताकि लालगढ़ के जन आंदोलन का दमन किया जा सके। इसी का हिस्सा था कि उन्होंने वार्ता का ढोंग करते हुए उदारवादी जनवादी बुद्धिजीवियों को भ्रम में डालने की चेष्टा की। साम्राज्यवादी एलआईसी की नीति के अंतर्गत सिविक एक्शन प्रोग्रामों के नाम से ढोंगी आर्थिक सुधार कार्यक्रमों की झड़ी लगा दी। यह सब जून 2009 से तेज हुआ। वहीं जी.के. पिल्लई ने खुलेआम घोषणा की कि ग्रीनहंट के सैन्य हमले में लालगढ़ उनके लिए एक प्रयोगशाला है।

शुरू हो गया। जनता ने अपने गांवों में आने वाली सभी सड़कों को खोदकर रास्ते बंद कर दिए। पेड़ काटकर गिरा दिए। छोटे–बड़े, महिला–पुरुष सभी ने इन प्रतिरोधी कार्रवाइयों में भाग लिया। समूची जनता संगठित हो गई।

जनता की संगठित ताकत के सामने उस इलाके में शोषक राज मशीनरी कुछ महीनों तक ठप्प हो गई। मेदिनीपुर, पुरुलिया और बांकुरा जिलों का समूचा सरहदी इलाका, जोकि जंगल महल कहलाता है, युद्ध क्षेत्र में तब्दील हो गया। सारी जनता इस युद्ध में सैनिक बन गई। गांवों की सुरक्षा का जिम्मा जन मिलिशिया ने उठाया। हजारों संख्या में जनता परम्परागत हथियारों से लैस हो गई। अंग्रेजों के खिलाफ ऐतिहासिक विद्रोह रचने वाले वीर शहीद सिद्धू–कानू के नाम पर निर्मित 'सिद्धू–कानू जन मिलिशिया' में छात्र, महिलाएं, किसान और युवा संगठित हो गए। पुलिस के अत्याचारों के खिलाफ शुरू हुआ यह आंदोलन धीरे–धीरे शोषित जनता की तमाम न्यायपूर्ण समस्याओं पर एक व्यापक संघर्ष के रूप में विकसित हुआ। महंगाई के खिलाफ, किसानों की फसलों को पर्याप्त दाम देने, विद्यालयों से पुलिस कैम्पों को हटाने, फर्जी मुठभेड़ों को बंद करने, ग्रीनहंट को रोकने, सेजों के निर्माण को बंद करने आदि मांगों को लेकर जनता ने कई संघर्ष किए। साथ ही, अपनी जरूरतें खुद के बल पर पूरी करने के लिए भी जनता ने पहलकदमी की। शिक्षा, स्वास्थ्य, सिंचाई, जन वितरण प्रणाली आदि सुविधाओं की जिम्मेदारी जन संगठनों ने खुद उठाई। जिस 'जन सत्ता' का ढिंढ़ोरा पिछले तीस सालों से सामाजिक फासीवादियों ने पीट रखा था, उसे नकारकर जनता ने क्रांतिकारी रास्ते से अपना शासन खुद ही चलाना शुरू किया। अपनी साहसिक संघर्षों और अनुपम कुरबानियों से नया इतिहास रचना शुरू किया। इसका मार्गदर्शन करते हुए कामरेड कोटेश्वरलु ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

जिनके हाथों में पिछले तीस बरसों से जुल्म व अत्याचार सहती रही, उन फासीवादी गुण्डों को जनता ने घसीटकर सड़कों पर लाया। गुण्डों के अड्डे और जनता के लिए यातना के केन्द्र बन चुके सीपीएम के दफ्तरों को जनता ने तोड़ डाला। वहां से कई औजारों और हथियारों को जनता ने जब्त किया। गांव–गांव में कुख्यात गुण्डों को जन अदालतों में दण्डित किया। कामरेड कोटेश्वरलु ने इन जन अदालतों को वर्ग दिशा व जन दिशा के आधार पर सही



## संगठक के रूप में जनता के दिलों में अमिट छाप

सिरिसिल्ला इलाके में किसानों के बीच संगठक की जिम्मेदारी निभाते समय कुछ ही दिनों के अंदर कामरेड कोटेश्वरलु को पुलिस ने गिरफ्तार किया। यह गिरफ्तारी उस दिन हुई थी, जिस दिन आपातकाल को हटाया गया था। इसलिए उनके फर्जी मुठभेड़ में मारे जाने का खतरा टल गया। तीन माह के अंदर ही कामरेड कोटेश्वरलु जमानत पर जेल से बाहर आ गए।

आपातकाल के अंधेरे दिनों में इंदिरा की हुकूमत ने जो–जो जुल्म किए थे उन पर जांच कमेटियों की बाढ़ सी आ गई। आखिरकार जन विरोध के चलते खुद इंदिरा को भी थोड़े समय के लिए ही सही जेल की हवा खाने पर मजबूर होना पड़ा था। ऐसे हालात में सरकार ने गिरायपल्ली फर्जी मुठभेड़ पर जांच के लिए भार्गव आयोग का गठन किया। अनधीकृत कमेटी के रूप में मुम्बई उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश वी.एम. तार्कुंडे की अध्यक्षता में जाने–माने वकीलों व बुद्धिजीवियों से नौ सदस्यीय कमेटी का गठन हुआ। इस 'मुठभेड़' से सम्बन्धित सच्चाइयों को जुटाकर तार्कुंडे कमेटी के जरिए भार्गव आयोग के सामने रखने में अहम योगदान देने वाले रैडिकल छात्र नेताओं में कामरेड कोटेश्वरलु एक थे।

नक्सलबाड़ी से प्राप्त शिक्षा की रोशनी में अगस्त 1977 में आंध्रप्रदेश राज्य कमेटी (ए.पी.एस.सी.) ने उस समय की परिस्थिति के मुताबिक नई कार्यनीति तय की जिसके आलोक में क्रांतिकारी गतिविधियों ने पूरे राज्य में जोर पकड़ लिया। पूरे प्रदेश में रैडिकल छात्र संगठन मजबूत होने लगा। जिला व तहसील मुख्यालयों में मौजूद सभी शिक्षा संस्थाओं में रैडिकल छात्र संगठन (आर.एस.यू.) एक नई शक्ति के रूप में उभरकर सामने आया।

फरवरी 1978 में आर.एस.यू. का दूसरा राज्य अधिवेशन वरंगल में उत्साहपूर्ण माहौल में सम्पन्न हुआ। एक वक्ता के रूप में उसमें भाग लेते हुए कामरेड कोटेश्वरलु ने वर्तमान राजनीतिक हालात में छात्रों के कर्तव्यों और ढोंगी चुनावों के बहिष्कार पर जोरदार भाषण दिया। अधिवेशन के आह्वान को पाकर सैकड़ों छात्र–नौजवानों ने गर्मियों में 'चलो गांवों की ओर' अभियान जोशोखरोश के साथ चलाकर 'जमीन उसकी हो जो उसे जोते' के नारे को

गांव–गांव में पहुंचाया। तबसे हर साल 'चलों गांवों की ओर' अभियान चलाना एक क्रांतिकारी परम्परा ही बन गया। छात्र–नौजवानों के लिए कक्षाएं चलाकर राजनीतिक शिक्षा देकर उन्हें गांवों में भेजने के लिए कामरेड कोटेश्वरलु ने खासा प्रयास किया। उस समय के हालात, जो खुले तौर पर काम करने के लिए अनुकूल थे, का फायदा उठाकर क्रांतिकारी आंदोलन के निर्माण में जोर लगाने हेतु उन्होंने पार्टी के सुझाव पर हैदराबाद के उस्मानिया विश्वविद्यालय में वकालत के कोर्स में दाखिला लिया।

1979 में रैडिकल युवा संगठन, उसके बाद 1981 में आंध्रप्रदेश किसान मजदूर संगठन अस्तित्व में आए थे। गांव–गांव में क्रांतिकारी गतिविधियों में तेजी आई। पीढ़ियों से सामंतों की कोठियों में कमरतोड़ मेहनत करके तंग आ चुके किसानों ने खुद को क्रांतिकारी राजनीति से संगठित करना शुरू किया। सामंती शोषण से सदियों से दमित तबकों को आत्मसम्मान से जीने की इस राजनीति से काफी राहत मिल गई। जमीनदारों की हवेलियों में अत्याचार सह चुकी ग्रामीण महिलाओं के लिए क्रांतिकारी राजनीति सहारा बनी। नौकरों के वेतनों में बढ़ोतरी, बंजर जमीनों, तालाब जमीन और जमींदारों की जमीनों पर कब्जा आदि संघर्ष सामने आए। करीमनगर जिले के गांव–गांव में जमींदारों के रोब–दाब पर रोक लगाई गई। उस समय करीमनगर और आदिलाबाद जिलों के एक–एक गांव में एक–एक खूंखार जमींदार की तूती बोलती थी। लोत्तुनूर राजेश्वर राव, मद्दुनूर राजेश्वर राव, इटिक्याल सत्यनारायण राव, आदिलाबाद में मंदमर्रि माधवराव आदि जालिम जमींदारों का राज चलता था। हरेक जमींदार खूंखार हत्यारा था। उनसे टक्कर ली रैडिकल छात्र–नौजवानों ने और उनका नेतृत्व किया था पार्टी ने। संगठित हो रही इस शक्ति के प्रतिनिधि व नेता के रूप में उभरने वालों में कामरेड कोटेश्वरलु एक अहम शख़्स थे।

इन किसान संघर्षों के फलस्वरूप ग्रामीण इलाकों में उत्पादन के सम्बन्धों में एक भारी हलचल पैदा हो गई। प्रदेश के जनवादियों, क्रांतिकारी बुद्धिजीवियों, वकीलों, प्रगतिशील विचारों वाले शिक्षकों और कर्मचारियों ने इन संघर्षों के प्रति समर्थन जताया। तेलंगाना क्षेत्र में सामंतवाद के खिलाफ व्यापक शोषित जन समुदायों की गोलबंदी शुरू हो गई। उस समय करीमनगर



प्रकार साम्राज्यवादी दुराक्रमण से अछूता क्षेत्र पूरे विश्व में खोजने पर भी नहीं मिलेगा, उसी प्रकार अमेरिका में पैदा हुए इस संकट के प्रभाव से मुक्त देश भी। यूरोप की कई अर्थव्यवस्थाओं में भारी उथल–पुथल मच गई। कई 'विकासशील' देशों की अर्थव्यवस्थाएं भी साम्राज्यवादी संकट के भंवर में फंसकर छटपटाने लग गईं। इससे उबरने हेतु दिए गए तमाम बेलआउट बेकार साबित होने लगे। नए–नए संसाधन चाहिए थे उन्हें। इस खोज के तहत ही सूर्जागढ़ से लालगढ़ तक छिपे हुए भूगर्भीय संसाधनों को खोद निकालना उनके एजेंडे में सबसे ऊपर आ गया। लेकिन उन्हें यह भी मालूम था कि इस क्षेत्र में मौजूद माओवादियों का खात्मा किए बिना अपने मन माफिक सम्पदाओं का दोहन करना संभव नहीं है। यहीं से दमन–उन्मूलन की नई योजनाएं तैयार हो गईं। उसके तहत ही ग्रीन हंट के नाम से एक नया देशव्यापी चौतरफा हमला सामने आया।

## नक्सलबाड़ी की विरासत में उभरे लालगढ़ जन आंदोलन का नेतृत्व

21वीं सदी के पहले दशक के आखिर में देश की क्रांतिकारी जनता की जुबान पर 'लालगढ़' एक प्यारा नाम बन गया। 2008 के आखिर से 2010 के आखिर तक लगभग दो सालों तक भारत के क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास में लालगढ़ एक लोकप्रिय शब्द के रूप में दर्ज हुआ। नक्सलबाड़ी की विरासत को जारी रखते हुए सामने आए इस संघर्ष का देश–विदेश के शोषित लोगों ने स्वागत किया।

लालगढ़ की जनता ने अपनी जमीनों को बचाने के लिए राजसत्ता से टक्कर ली। जमीन संघर्ष में दृढ़ता से खड़ी जनता पर फासीवादी पुलिस ने कहर बरपाया था। हत्या और अत्याचार पुलिस के रोजमर्रा के काम बन गए। इसके खिलाफ वहां की जनता, खासकर आदिवासियों ने 'पुलिस अत्याचार विरोधी जन कमेटी' (पी.सी.ए.पी.ए.) का गठन कर लिया। उस कमेटी की अगुवाई में जनता सैकड़ों व हजारों की संख्या में संगठित हुई। उनकी मांग यह थी कि उनकी मां–बहनों और बाल–बच्चों पर हिंसा व जुल्म करने वाली पुलिस के अधिकारी उनसे माफी मांग लें। लेकिन अपने वर्गीय चरित्र के अनुसार राजसत्ता ने जनता की इस मांग को ठुकरा दिया। यहीं से विद्रोह

नहीं टेके। नंदिग्राम संग्राम के समर्थन में छात्र, बुद्धिजीवी, मजदूर और तमाम जनवादी आगे आए। सेज विरोधी संघर्ष के तहत सिंगूर और नंदिग्राम में जनता ने संघर्ष के स्वरूपों को ईजाद किया। जनता में मौजूद संघर्ष का आम स्वरूप 'आरंदन' (घर में चूल्हा नहीं जलाना) से लेकर सशस्त्र प्रतिरोध तक सभी तरीकों में प्रतिरोधी संघर्ष चलाया गया। जनता की पहलकदमी पर नंदिग्राम में देशी हथियार बनाने का कारखाना खड़ा किया गया ताकि जन मिलिशिया को सशस्त्र किया जा सके। सीपीएम के सशस्त्र गुण्डों, पुलिस व सीआरपी के बलों से जनता ने जमकर लोहा लिया। नंदिग्राम जंगेमैदान में बदल गया। आखिरकार बुद्धदेब की तथाकथित वामपंथी सरकार को इस संघर्ष के सामने घुटने टेकने पड़े। नंदिग्राम से केमिकल हब हट गया। टाटा का नैनो सिंगूर से गुजरात भाग गया। जनता की जीत हुई। इस जीत के पीछे सर्वहारा के अगुवा दस्ते का योगदान था जिसकी अगुवाई कर रहे थे कामरेड कोटेश्वरलु।

नंदिग्राम की जीत की बरसी से पहले ही लालगढ़ में भी जन संघर्ष अपनी विशिष्टताओं के साथ फूट पड़ा। लालगढ़ में बड़ा पूंजीपति जिंदल अपनी पूंजी के साथ उतरा। बुद्धदेब और रामविलास पासवान ने लाल कालीन बिछाकर जिंदल का स्वागत किया। जंगल महल इलाके में मौजूद खनिज संपदा को लूटने–खसोटने के लिए केन्द्र व राज्य सरकारों ने अपनी पूरी राजमशीनरी उतार दी। लेकिन जंगल महल क्षेत्र की जनता ने इसका विरोध किया। विदेशी और दलाल नौकरशाह पूंजीपतियों के सामने नतमस्तक बुद्धदेब और रामविलास का काफिला जब जिंदल द्वारा प्रस्तावित स्टील प्लांट का शिलान्यास कर वापस जा रहा था, उसे निशाना बनाकर पीएलजीए ने बारूदी सुरंग का विस्फोट किया। उसके बाद पुलिस बलों ने जनता पर पाशविक हमला छेड़ दिया जिसके खिलाफ जनता का गुस्सा भड़क उठा। और इस तरह 13 नवम्बर को एक ऐतिहासिक जन विद्रोह छिड़ गया लालगढ़ में।

लालगढ़ में जन विद्रोह फूट पड़ने के समय तक देश और विश्व के आर्थिक मंच पर भारी उथल–पुथल मची हुई थी। अमेरिका में एक नए संकट के रूप में गृह ऋणों का बुलबुला फूट पड़ा। इससे तीखा मौद्रिक संकट पैदा हुआ। अमेरिका का यह संकट वहीं तक सीमित रहने वाला नहीं था। जिस



व आदिलाबाद जिले संघर्ष के केन्द्र बिंदु में थे। शिक्षकों और कर्मचारियों के संगठनों ने अपनी जायज समस्याओं को लेकर सक्रिय रूप से आंदोलन की राह पकड़ ली। कर्मचारियों के साथ गहरे सम्बन्ध रखने वाले कामरेड कोटेश्वरलु ने उन्हें पार्टी की ओर से मार्गदर्शन प्रदान किया ताकि वे अपनी समस्याओं पर आंदोलन छेड़ सकें। जिले के कई न्यायालयों में कार्यरत वकीलों के साथ उनके अच्छे सम्बन्ध थे जिससे अदालतों में पार्टी कार्यकर्ताओं और किसानों के मुकदमे लड़ने में मदद मिली। कामरेड कोटेश्वरलु सभी खुले कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेकर नेतृत्व प्रदान किया करते थे। कुछ ही समय बाद उनके नेतृत्व में काम करते हुए साइनी प्रभाकर, दग्गु राजलिंगु, बय्यपु देवेंदर रेड्डी जैसे दूसरी श्रेणी के नेतृत्वकारी कामरेड्स उभरकर सामने आए थे जो बाद में अलग–अलग समय में शहीद हो गए।

## इतिहास की गति को बदलने वाली 'जगित्याल विजयी यात्रा' के नेता के रूप में

9 सितम्बर 1978। कामरेड माओ की दूसरी बरसी का दिन था। जगित्याल कस्बा हजारों किसानों से भर चुका था। जूनियर कालेज का ग्राउण्ड खचाखच भरा हुआ था। वे किसान करीमनगर, आदिलाबाद व निजामाबाद जिलों के 150 से ज्यादा गांवों से जगित्याल में आयोजित सभा में शामिल होने आए थे। वे सब जमीन के लिए आए थे। 'जमीन उसकी हो जो उसे जोते' के नारे ने उन्हें वहां खींच लाया। उन्होंने सामंती हुकुमशाही को चुनौती दी। सभी ने ठान ले रखी थी कि अब जमींदारी को खत्म करना ही है। बेगारी, जुर्माने आदि शोषण के तरीकों से पिस रहे उन किसानों को क्रांतिकारी पार्टी का सहारा मिल गया। उस मंच पर आसीन लोगों में कामरेड कोटन्ना भी थे। वे उस सभा को सम्बोधित करने वाले प्रमुख वक्ताओं में से एक थे। हजारों किसानों की यह सभा इतिहास में 'जगित्याल जैत्रयात्रा' यानी 'जगित्याल विजयी यात्रा' के रूप में दर्ज हो गई।

जगित्याल विजयी यात्रा से उत्पन्न क्रांतिकारी राजनीतिक माहौल में 60 से ज्यादा कट्टर जमींदार गांव छोड़कर शहरों में भाग गए। सैकड़ों गांवों में जमींदारों ने किसानों के सामने घुटने टेक दिए। जो नहीं झुके उनका किसानों ने 'हुक्का–पानी बंद' करवा दिया। इस तरह गांवों में जमींदारों पर किसानों

ने सामाजिक बहिष्कार लागू किया। एक जमाने में जमींदार के सामने सिर उठाने की हिम्मत तक न कर पाने वाले गरीब, दलित व दमित किसानों ने एकजुटता के साथ उन पर सामाजिक बहिष्कार लागू किया। इससे तेलंगाना के पूरे देहातों में खलबली मच गई। जमींदारों की पत्नियों को कमर झुकाकर घर का सारा काम करने पर मजबूर होना पड़ा। झाड़ू लगाने से लेकर गाय–भैंस का दूध दुहने तक का हर काम उन्हीं को करना पड़ा। जमींदारों के लिए दाढ़ी बनाने वाले और कपड़े धोने वाले नहीं मिले। खेतीबाड़ी का काम ठप्प हो जाने से उनकी सैकड़ों एकड़ जमीनें बंजरों में तब्दील हो गईं। संघर्ष के इस स्वरूप का नतीजा था यह।

सालों से गांवों में जमींदारों द्वारा जातियों और परिवारों के बीच झगड़े पैदा कर पंचायत के नाम से गरीबों से जुर्माने के तौर पर लूटे गए सारे पैसे लौटा देने की मांग किसानों ने उठाई। लेकिन गांव–गांव में किसान–मजदूर संगठन का इस तरह सामंतशाही पर हावी हो जाना उन्हें नागवार गुजरा। तेलंगाना क्षेत्र के जमींदार तत्कालीन मुख्यमंत्री चेन्नारेड्डी से जा मिले और इस स्थिति पर काबू करने की मांग रखी। फौरन ही राजसत्ता उतर आई। सिरिसिल्ला और जगित्याल तहसीलों को 'आशांत क्षेत्र' घोषित किया गया। जमींदारों की कोठियों की सुरक्षा के लिए विशेष सशस्त्र पुलिस बलों को गांवों में तैनात किया गया। इसी सिलसिले में जगित्याल इलाके के जमींदारों ने किसान कार्यकर्ता पोशेट्टी की हत्या कर दी। इससे सरकारी हिंसा का मुकाबला करना किसानों के लिए अनिवार्य हो गया।

पेद्दापल्ली तहसील के रागानेडु गांव के किसानों ने अपनी मांगें न मानने पर जमींदारों को गिरफ्तार किया। उन दिनों यह कार्रवाई 'रागानेडु किड्नैप' के नाम से काफी चर्चित हुई थी। इस सनसनीखेज घटना ने जमींदारों के दिलों में हड़कम्प मचाई। इसका नेतृत्व कामरेड कोटेश्वरलु ने किया था। लेनिन के इस कथन को कि जन आंदोलनों से ही संघर्ष के स्वरूप पैदा होते हैं, कामरेड कोटेश्वरलु ने कई बार साबित किया। जब जिले को खाकी छावनी में बदलकर गांवों को संगीनों से दबाया जा रहा था, तब कामरेड कोटेश्वरलु फिर से भूमिगत हो गए। कुछ ही दिनों बाद उन्हें फिर उसी तहसील के रच्चापल्ली गांव में पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। कुछ दिन बाद वे फिर से



देश के लगभग सभी राज्यों में सेज किसानों के लिए अभिशाप बन गए। कई राज्य सरकारों ने सेजों को अनुमति देकर किसानों से जमीनें छीनकर बड़े व विदेशी पूंजीपतियों को सौंपना शुरू किया। जहां लुटेरे शासक वर्ग सेजों को देश की आर्थिक प्रगति के लिए महत्वपूर्ण बताकर ढिंढ़ोरा पीटते रहे, वहीं शोषित जनता ने उन्हें अपने विनाश के दरवाजे के रूप में चिन्हित करते हुए उनके खिलाफ सिंगूर, नंदिग्राम आदि जगहों पर जुझारू संघर्ष छेड़ दिए। पश्चिम बंगाल के सिंगूर में टाटा द्वारा प्रस्तावित नैनो कार उद्योग और नंदिग्राम में इंडोनेशिया के सलेम ग्रुप द्वारा प्रस्तावित केमिकल हब का जनता ने विरोध किया। 'जान देंगे पर जमीन नहीं', यह बना था जनता का संग्रामी नारा। इस नारे को आत्मसात करते हुए हमारी पार्टी ने सिंगूर व नंदिग्राम में संघर्षरत किसानों का साथ दिया। कामरेड कोटेश्वरलु ने अपने अपार अनुभव के आधार पर पश्चिम बंगाल की राज्य कमेटी को इन आंदोलनों का नेतृत्व करने हेतु मार्गदर्शन दिया। संयुक्त मोर्चे के तहत निर्मित जमीन अधिग्रहण प्रतिरोध समिति (बीयूपीसी) में शामिल जन संगठनों का सक्रिय मार्गदर्शन करते हुए किसानों को जुझारू संघर्षों में उतारने में पार्टी सफल रही। नंदिग्राम में महिलाओं ने खुद को 'मातंगी महिला संगठन' में संगठित किया। जनता, खासकर नौजवानों ने सशस्त्र प्रतिरोध का झण्डा गाड़कर सामाजिक फासीवादी गुण्डों का जमकर मुकाबला किया।

दलाल नौकरशाह पूंजीपतियों और उनके आका साम्राज्यवादियों की सेवा में समर्पित 'मार्क्सवादी' चंद हजार करोड़ रुपए की विदेशी पूंजी के एवज में पूरे नंदिग्राम को कब्रगाह में तब्दील करने पर उतारू हो गए थे। जनता पर उन्होंने अकथनीय अत्याचार किए थे। महिलाओं के साथ बलात्कार की अनगिनत घटनाएं घटी थीं। अपनी जमीनों को बचाने के लिए संघर्ष में अग्रिम पंक्ति में खड़े युवक–युवतियों को गुण्डों ने काट–काट कर नहरों में फेंक दिया। कई लोगों के शवों को लापता किया। नवम्बर 2007 तक नंदिग्राम में भड़क उठे जन संग्राम के शोलों को बुझाने के लिए सीपीएम ने राज्य भर से गुण्डों को इकट्ठा कर नरसंहार मचाए। अपने पास मौजूद हथियारों के अलावा गुण्डों ने सीआरपीएफ और पुलिस बलों से प्राप्त आधुनिक राइफलें लेकर संघर्षरत जन समूहों पर अंधाधुंध हमले किए। फिर भी जनता ने घुटने

प्रयास किया। 1998 में पार्टी यूनिटी के साथ विलय हो जाने के बाद उन्होंने बिहार–झारखण्ड में भी क्रांतिकारी आंदोलन के विकास में अपना योगदान दिया। वहां पर पार्टी यूनिटी की अगुवाई में पुराने समय से जारी सशस्त्र किसान आंदोलन का गहराई से अध्ययन करते हुए उसे उन्नत स्तर में विकसित करने की कोशिश की। बिहार–झारखण्ड राज्य कमेटी की बैठकों में उपस्थित होकर तथा आंदोलन के इलाकों का दौरा कर वर्ग संघर्ष को तेज करने और गुरिल्ला युद्ध को विकसित करने हेतु अपना योगदान दिया। पार्टी सदस्यों को पेशेवर कार्यकर्ताओं में बदलने तथा उन्हें हमेशा जनता व आंदोलन के साथ जुड़े रहने हेतु प्रोत्साहित करने में उन्होंने विशेष ध्यान दिया। 2004 में एमसीसीआई और भाकपा (मा–ले) (पीपुल्सवार) पार्टियों के विलय के बाद कामरेड कोटेश्वरलु ने पोलिटब्यूरो सदस्य व नव गठित पूर्वी रीजनल ब्यूरो सदस्य के रूप में रहकर मुख्य रूप से पश्चिम बंगाल पर अपने काम को केन्द्रित किया।

उपरोक्त जिम्मेदारियों का निर्वाह करते हुए ही उन्होंने कुछ समय के लिए सीकम्पोसा (दक्षिण एशिया की माओवादी पार्टियों और संस्थाओं की समन्वय समिति) के प्रभारी के रूप में काम किया। अखिल भारतीय स्तर पर निर्मित साम्राज्यवाद विरोधी मंचों का मार्गदर्शन दिया। पूर्वोत्तर क्षेत्र के विभिन्न राष्ट्रीय मुक्ति संगठनों से बिरादराना सम्बन्ध बनाए रखते हुए उनके साथ हुई द्विपक्षीय बैठकों में पार्टी के प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया। विभिन्न क्रांतिकारी व जनवादी संगठनों का मार्गदर्शन करते हुए देश भर में साम्राज्यवाद विरोधी व सामंतवाद विरोधी संयुक्त मोर्चे की नींव डाली।

दोनों पार्टियों के विलय के बाद देश में बेहद अनुकूल क्रांतिकारी माहौल निर्मित हुआ। दोनों जन सेनाओं का विलय एकीकृत जन मुक्ति गुरिल्ला सेना के रूप में होने से शोषित जनता का उत्साह दुगुना हुआ। इस एकता ने शोषक शासक वर्गों में घबराहट पैदा की। उन्होंने बड़े पैमाने पर दुष्प्रचार की मुहिम शुरू की कि 'माओवाद देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए सबसे बड़ा खतरा है।' साम्राज्यवादी भूमण्डलीकरण की नीतियों को सिर माथे पर उठाने वाले भारत के शोषक शासक वर्गों ने देश में कई जन विरोधी नीतियां लागू कीं। इनमें से एक है सेज (विशेष आर्थिक क्षेत्र)।



जमानत पर रिहा होकर भूमिगत हो गए। पुलिस की घेराबंदी को चतुराई से तोड़कर निकल जाने की कई घटनाएं उनकी क्रांतिकारी जिंदगी में घटी हैं।

तब तक जिले के कई गांवों में बेरोजगार युवा वर्ग और किसान संगठित हो गए। महान तेलंगाना सशस्त्र किसान आंदोलन की तर्ज पर गांवों में सैकड़ों ग्राम रक्षा दल निर्मित हो गए। पेद्दापल्ली तहसील के पालतेम, दुंगातुर्ति, कुक्कलागूडूर, रागानेडु, बय्यारम, रामय्यापल्ली, तक्केल्लापल्ली आदि गांवों में तथा मंथनी, जगित्याल, कोरुट्ला, मेटपल्ली, हुजूराबाद और हुस्नाबाद तहसीलों के दर्जनों गांवों में ग्राम रक्षा दलों का निर्माण हुआ। गांवों में जमींदारों की कोठियां खाली पड़ गईं और उनके हुक्मों का पालन करने वाला कोई नहीं बचा था। गांव–गांव में लाल झण्डों की लालिमा और क्रांतिकारी गीतों की गूंज छा गई।

## आंध्रप्रदेश आंदोलन की कमान संभालते हुए

करीमनगर जिले में किसान आंदोलन संगठित होने लगा। धीरे–धीरे गांवों में किसान पुलिस बलों के जुल्म व अत्याचारों का मुकाबला करने लग गए। पुलिस द्वारा गिरफ्तार किए गए किसानों से जिला जेल हमेशा भरा रहता था। गलत मामलों में फंसाए गए किसानों से सत्र न्यायालय और तहसील न्यायालय में हमेशा भीड़ लगी रहती थी। 1977 में नई कार्यनीति से पार्टी ने जब जनता में कामकाज शुरू किया, उस समय करीमनगर और आदिलाबाद जिलों को मिलाकर संयुक्त जिला पार्टी कमेटी का गठन किया गया। उसके सचिव के रूप में कामरेड कोटन्ना को चुन लिया गया। 1979 तक व्यापक व तेज हो चुके आंदोलन का सुचारू रूप से नेतृत्व करने के लिए दोनों जिलों के लिए अलग–अलग कमेटियों का गठन किया गया। उस समय कामरेड कोटन्ना को करीमनगर जिला कमेटी सचिव चुन लिया गया। आदिलाबाद जिला कमेटी के सचिव के रूप में शहीद कॉमरेड श्याम (नल्ला आदिरेड्डी) को चुन लिया गया। उसके बाद सितम्बर 1980 में आयोजित आंध्रप्रदेश राज्य के 12वें पार्टी अधिवेशन में उन्होंने प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया। इस अधिवेशन में उन्हें राज्य कमेटी सदस्य के रूप में चुन लिया गया। तीन महीने बाद वे राज्य कमेटी के सचिव चुन लिए गए। तब वे सिर्फ 26 साल के थे। तबसे उन्होंने 'कामरेड प्रह्लाद' के नाम से आंध्रप्रदेश के क्रांतिकारी आंदोलन

की कमान संभाल ली।

आंध्रप्रदेश पार्टी के 12वें अधिवेशन में लिए गए अहम फैसलों में करीमनगर व आदिलाबाद जिलों के किसान संघर्ष को गुरिल्ला जोन के स्तर में विकसित करना; आधार इलाकों की स्थापना के लक्ष्य से जन मुक्ति सेना के भ्रूण रूप में गुरिल्ला दस्तों का निर्माण करने हेतु पार्टी के एक तिहाई कैडरों को दण्डकारण्य भेजना; खम्मम, निजामाबाद जिलों समेत पूरे उत्तर तेलंगाना और राज्य के दूसरे इलाकों में आंदोलन को फैलाना आदि प्रमुख थे। इन पर अमल करने के लिए पार्टी ने युद्ध स्तर पर कमर कस ली। जून–जुलाई 1980 तक राज्य कमेटी ने 35 क्रांतिकारियों को चुनकर दण्डकारण्य भेज दिया था। किसान गुरिल्ला दस्तों के गठन के साथ पार्टी ने जन सेना के निर्माण की दिशा में शुरूआती कदम उठाया। दण्डकारण्य के आंदोलन के लिए करीमनगर व आदिलाबाद जिलों में जारी सशस्त्र किसान आंदोलन से समर्थन व सहयोग मिला और राज्य कमेटी सचिव के रूप में कामरेड प्रह्लाद ने इसमें प्रमुख भूमिका निभाई।

## फासीवादी सरकारी हिंसा का मुकाबला कर क्रांतिकारी आंदोलन को बढ़ाते हुए

एक तरफ जुझारू किसान आंदोलन और व्यापक पैमाने पर छात्र आंदोलन तथा दूसरी तरफ आगे बढ़ते मजदूरों के आंदोलन और जनवादी अधिकारों के आंदोलन – इन सबके साथ–साथ जंगल क्षेत्रों में नव विस्तारित आंदोलन भी भारी सरकारी हिंसा का मुकाबला करते हुए आगे बढ़ता रहा। दण्डकारण्य क्षेत्र में आंदोलन के विस्तार के क्रम में महाराष्ट्र की पुलिस ने गुरिल्ला दस्ते पर 2 नवम्बर 1980 को हमला किया, जिसमें कामरेड पेद्दि शंकर शहीद हो गए।

बढ़ते क्रांतिकारी आंदोलन को रोकने हेतु राजसत्ता खुलेआम सामूहिक हत्याकाण्डों पर उतर आई। इसके अंतर्गत उसने इंद्रवेल्ली में नरसंहार किया। आदिलाबाद जिला किसान–मजदूर संगठन के अधिवेशन के मौके पर 20 अप्रैल 1980 के दिन आमसभा में भाग लेने के लिए आदिवासी एकजुट हुए थे। आदिवासियों को इस तरह अपने परम्परागत वाद्य यंत्रों और हथियारों को हाथों में लेकर इकट्ठे होते देखकर भयभीत हुए पुलिस बलों ने जन समूह पर



पश्चिम बंगाल, बिहार, झारखण्ड, उत्तरप्रदेश, ओड़िशा, दिल्ली, पंजाब, हरियाणा आदि पूर्वी व उत्तरी भारत के राज्य शामिल थे) के सचिव की जिम्मेदारी सीसी ने उन्हें सौंप दी।

कामरेड कोटेश्वरलु ने पुरानी पीपुल्सवार और एमसीसीआई के बीच एकता के लिए अथक प्रयास किया। 2001 की कांग्रेस के पहले ही पुरानी एमसीसीआई ने एकतरफा संघर्षविराम की घोषणा की और कांग्रेस के बाद पुरानी पीपुल्सवार पार्टी ने भी संघर्षविराम की घोषणा की जिससे तनाव का वातावरण छंट गया। इस माहौल से दो पार्टियों के बीच वार्ता की प्रक्रिया के फिर से शुरू होने का रास्ता साफ हो गया। दोनों ही पार्टियों ने आपसी झड़पों के उस दौर को 'काला अध्याय' माना। 2002 के आखिर में आयोजित पुरानी पीपुल्सवार की सीसी बैठक में कामरेड कोटेश्वरलु ने प्रस्ताव रखा था कि तत्कालीन एमसीसीआई एकता वार्ता के लिए तैयार है, अतः हमें वार्ता की प्रक्रिया शुरू करनी चाहिए। इसे सीसी ने बड़े उत्साह के साथ एकमत से अनुमोदन कर वार्ता के लिए सभी अधिकार प्राप्त हाई पावर डेलिगेशन का चयन किया। इस प्रतिनिधिमण्डल में कामरेड कोटेश्वरलु एक थे। 2003–04 में दो पार्टियों के बीच तीन दौर में हुई द्विपक्षीय वार्ता में कामरेड कोटेश्वरलु ने अहम भूमिका निभाई। उन प्रयासों का सार्थक नतीजा ही था 21 सितम्बर 2004 को भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) का आविर्भाव। नक्सलबाड़ी के बाद करीब चार दशकों के इतिहासक्रम में यह एक महत्वपूर्ण घटना थी। एकीकृत पार्टी की एकता कांग्रेस – 9वीं कांग्रेस जनवरी 2007 में सम्पन्न हुई। इस कांग्रेस ने कामरेड कोटेश्वरलु को सीसीएम के रूप में चुन लिया जिसके बाद वे फिर एक बार पोलिटब्यूरो सदस्य बन गए।

## पूर्व और उत्तर भारत में क्रांतिकारी आंदोलन के विकास में योगदान

1993 के आखिर से कामरेड कोटेश्वरलु की क्रांतिकारी जिंदगी मुख्य रूप से पूर्व व उत्तर भारत के राज्यों के साथ, खासकर पश्चिम बंगाल के क्रांतिकारी आंदोलन के विकास व विस्तार के साथ जुड़ी रही। 1994 की शुरूआत से बंगाल को अपना प्रधान कार्यक्षेत्र बनाकर उन्होंने दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, उत्तरप्रदेश आदि राज्यों में भी आंदोलन के विकास हेतु

1998 में दोनों पार्टियां एकीकृत भाकपा (मा–ले) (पीपुल्सवार) के रूप में एकताबद्ध हो गईं। इस तरह देश के अलग–अलग इलाकों में क्रांतिकारी राजनीति से दृढ़तापूर्वक संघर्ष करने वाली दो पार्टियों के बीच एकता कायम होने से देश भर में सच्चे क्रांतिकारियों के बीच एकता के लिए अनुकूल माहौल निर्मित हो गया। इन दो पार्टियों के विलय के बाद मार्च 2001 में पुरानी पीपुल्सवार पार्टी की 9वीं कांग्रेस सफलतापूर्वक सम्पन्न हो गई। भाकपा (मा–ले) की 8वीं कांग्रेस के बाद 30 वर्षों के अंतराल में यह कांग्रेस सफल हुई थी जिसने पुरानी पीपुल्सवार पार्टी की लाइन को समृद्ध बनाया। सांगठनिक व सैन्य मोर्चों में उच्च समझदारी बन गई। कांग्रेस ने यह फैसला लिया था कि देश के तमाम सच्चे क्रांतिकारियों के बीच एकता की प्रक्रिया को तेजी से आगे बढ़ाया जाए। आधार इलाकों के निर्माण के लक्ष्य से गुरिल्ला युद्ध को तेज करना, गुरिल्ला जोनों में गुरिल्ला बेसों की स्थापना के जरिए आधार इलाकों के निर्माण की प्रक्रिया को तेज करना, रणनीतिक आत्मरक्षा की स्थिति में होते हुए कार्यनीतिक प्रत्याक्रमण अभियानों को चलाना, पूरी ताकत को जुटाकर पार्टी के कार्यभारों को अभियानों के तहत पूरा करना, ग्राम राज्य कमेटियों को शक्तिशाली क्रांतिकारी जन कमेटियों के रूप में उभारना आदि मुद्दों पर उस कांग्रेस ने सही दिशा दी। उस कांग्रेस में एक रुझान के तौर पर सामने आए वामपंथी दुस्साहसवादी विचारों को प्रतिनिधियों ने बहुमत से हराकर क्रांतिकारी लाइन को समृद्ध बनाया। साथ ही, अतीत के कार्याचरण का जायजा लिया गया। 1980 में पार्टी द्वारा की गई समीक्षा ने बाद के व्यवहार के लिए दीए की तरह काम किया, जबकि 1995 और 2001 में की गई समीक्षाओं ने बाद के दौर में क्रांतिकारी व्यवहार का मार्गदर्शन किया। खास बात यह थी कि तब तक दक्षिण एशिया के देशों में माओवादी पार्टियों और संस्थाओं की समन्वय कमेटी (सीकम्पोसा) का गठन हो चुका था। 'रिम' (रिवोल्यूशनरी इंटरनेशनलिस्ट मूव्हमेंट) के साथ जारी बिरादराना सम्बन्धों की पृष्ठभूमि में 2001 की कांग्रेस सम्पन्न हुई। इस कांग्रेस ने एक स्वर में अपना दृढ़ मत प्रकट किया कि एमसीसी के साथ जारी झड़पों को रोका जाए। इसमें फिर से केन्द्रीय कमेटी सदस्य के रूप में चुन लिए गए कामरेड कोटेश्वरलु को सीसी ने पोलिटब्यूरो में चुन लिया। कांग्रेस के बाद पहली बार रीजनल ब्यूरो का गठन किया गया था। इसके तहत गठित उत्तर ब्यूरो (जिसमें



अंधाधुंध गोलीबारी की। इस हत्याकाण्ड में 13 आदिवासी मारे गए जबकि 60 अन्य घायल हो गए। आदिलाबाद जिले में किया गया यह सरकारी हत्याकाण्ड एक और जलियांवाला बाग के रूप में कुख्यात हुआ था। इस हत्याकाण्ड पर न्यायिक जांच की मांग करने और उस गोलीबारी में घायल हुए लोगों का इलाज करवाने हेतु जनवादियों और चिकित्सकों को गोलबंद करने में कामरेड कोटेश्वरलु ने जो तत्परता और प्रतिबद्धता दिखाई थी, वह क्रांतिकारियों के लिए हमेशा अनुसरणीय है।

राजसत्ता ने इंद्रवेल्ली के रास्ते बंद करने की सोची। लेकिन उसके बाद की सच्चाई यह है कि जंगल के रास्ते खुल गए। मैदानों में सुलगाई गई आग की लपटें हरे–भरे जंगलों में फैल गईं। जंगलों और मैदानों में प्रज्वलित इस आग को मजदूर बस्तियों ने हवा दी। इंद्रवेल्ली हत्याकाण्ड ने पास में स्थित सिंगरेणी कोयला खदानों में भी आग लगा दी।

## सिंगरेणी मजदूर आंदोलन के विकास में

1981 में सिंगरेणी कोयला खदानों के मजदूरों ने ऐतिहासिक हड़ताल की। वेतनों में बढ़ोत्तरी समेत कई जायज मांगों को लेकर लम्बी हड़ताल चली थी। हड़ताल के फलस्वरूप राज्य में कोयले की किल्लत पैदा हुई थी जिससे बिजली का उत्पादन बुरी तरह ठप्प हुआ था। कई उद्योगों में उत्पादन रुक गया था। रेलगाड़ियां बंद हो गईं थीं। इस जुझारू हड़ताल के सामने तत्कालीन मुख्यमंत्री अंजैय्या को सिर झुकाना पड़ा। चूंकि उसने मान्यताप्राप्त मजदूर संगठनों के साथ ही बातचीत करने की ठान ले रखी थी, इसलिए पार्टी ने पहलकदमी के साथ एक नया फैसला ले लिया। इसी का नतीजा था एक नए मजदूर संगठन का निर्माण। तब तक पार्टी की समझदारी यह थी कि हमें पुराने मजदूर संगठनों (मुख्य रूप से संशोधनवादी मजदूर संगठनों) में ही काम करते हुए अपनी ताकतों को संगठित करना चाहिए। हालांकि कोयला मजदूरों की हड़ताल ने 'सिंगरेणी कार्मिक समाख्या' (सि.का.स.) के नाम से एक मजदूर संगठन को जन्म दिया। पार्टी द्वारा लिए गए इस ऐतिहासिक फैसले के पीछे शहीद कामरेड श्याम, जोकि सिंगरेणी आंदोलन का शुरू से नेतृत्व करते रहे थे, के साथ–साथ प्रहलाद आदि कामरेडों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। लगभग दो दशकों तक संघर्ष का झण्डा बुलंद रखकर कोयला खनिकों की तमाम

जायज समस्याओं पर संघर्षों में आगे रहने वाला सि.का.स. मजदूरों की संगठित ताकत का पर्याय बन गया। सि.का.स. के निर्माण के बाद आंध्रप्रदेश में कई अन्य मजदूर संगठनों के निर्माण का रास्ता सुगम हो गया। बेल्लमपल्ली के कन्नाल बस्ती, बूडिदा गड्डा से मंदामर्री, रामकृष्णपुरम, गोदावरीखनि, कमानपुर, बेगमपेट, मुत्तारम से इल्लेंदु तक फैले हुए सिंगरेणी खनिकों ने आज कामरेड कोटन्ना की अंतिमयात्रा में भाग लेकर सर्वहारा के इस महान नेता को अपना लाल सलाम पेश किया। इससे यह जाहिर हो जाता है कि शहीद नेता से उनका रिश्ता कितना प्रगाढ़ था।

1970 के दशक में पार्टी को दोबारा संगठित करने में अहम भूमिका निभाने वाले तत्कालीन नेता कोण्डापल्ली सीतारामय्या (के.एस.) को 1982 में पुलिस ने गिरफ्तार किया था। उन्हें जेल से छुड़ाने के लिए राज्य कमेटी ने एक कार्रवाई की योजना बनाई। उसके अनुसार हमारे कामरेडों ने जनवरी 1984 में पुलिस की घेराबंदी को तोड़कर एक पुलिस वाले को मार गिराकर के. एस. को अस्पताल से छुड़ा लाया। उन दिनों यह कार्रवाई 'ग्रेट एस्केप' के नाम से क्रांतिकारी खेमे में मशहूर हुई थी। इस साहसिक गुरिल्ला कार्रवाई की योजना तैयार करने वालों में कामरेड प्रह्लाद प्रमुख थे।

पार्टी की अगुवाई में आगे बढ़ रहे क्रांतिकारी आंदोलन से दुश्मन की नींदें उड़ने लगी थीं। 1981 के आखिर तक दुश्मन ने करीमनगर जिले के जगित्याल इलाके में फर्जी मुठभेड़ों का सिलसिला शुरू किया था जिसे बाद में सभी इलाकों में फैलाया गया। बय्यपु देवेंदर रेड्डी, हरिभूषण, पल्ले कनकन्ना, खैरी गंगारम, रामकृष्ण, नागेश्वरराव, साइनी प्रभाकर आदि होनहार पार्टी कैडरों को दुश्मन ने गोलियों से भून दिया। फर्जी मुठभेड़ों को अंजाम देकर इनाम–इकराम पाने वाले क्रूर पुलिस अधिकारियों ने आंध्रप्रदेश की राजधानी हैदराबाद में कामरेड प्रह्लाद का पता लगाकर जब उन्हें पकड़ने की कोशिश की, तो उन्होंने अपने पिस्तौल से उनका मुकाबला कर बड़ी आसानी से शहर की भीड़ में ओझल हो गए। उस समय क्रांतिकारी आंदोलन के खिलाफ खड़े होकर फर्जी मुठभेड़ों में क्रांतिकारियों की हत्या करने वाले क्रूर पुलिस अधिकारियों को सबक सिखाने का पार्टी ने फैसला लिया था। जब वर्ग संघर्ष तेज होने लगा था, ऐसे समय जनयुद्ध की राजनीति से प्रेरित हो रहे



शक्तियों के साथ हुई एकता वार्ताओं में अपनी जिम्मेदारी सृजनात्मक ढंग से निभाई। मौजूदा युग के चरित्र के बारे में हुई चर्चा के बाद इस अधिवेशन ने इसे 'लेनिनवादी युग' के रूप में निर्धारित किया। साथ ही, अधिवेशन ने यह माना कि अगस्त 1977 में सशस्त्र संघर्ष को त्यागने का आह्वान देना सही नहीं था और संशोधनवादी देंग गिरोह का तीन दुनिया सिद्धांत कामरेड माओ की विचारधारा का विकृतिकरण है। दूसरे विश्व युद्ध के बाद विश्व अर्थव्यवस्था में आए विकास और संकट के क्रम पर स्पष्टता दिलाने के साथ–साथ चुनाव बहिष्कार में सक्रियता व निष्क्रियता पर स्पष्ट समझ बनाने में यह अधिवेशन सफल हुआ। सैद्धांतिक व राजनीतिक मुद्दों के साथ–साथ सांगठनिक व सैनिक मोर्चों में भी अधिवेशन ने हमारे अनुभव की समीक्षा की और समझदारी बढ़ाई। क्रांतिकारी व्यवहार में राजसत्ता की अवधारणा पर तथा गुरिल्ला जोनों के बारे में हमारी समझदारी बढ़ाई।

इसी अधिवेशन में सैनिक मामलों के लिए 'स्कोमा' (सैन्य मामलों पर सब–कमेटी) और राजनीतिक शिक्षा के लिए 'स्कोप' (राजनीतिक शिक्षा पर सब–कमेटी) का गठन किया गया। स्कोप की जिम्मेदारी कामरेड कोटेश्वरलु को दी गई थी। इस अधिवेशन के बाद पार्टी यूनिटी और पीपुल्सवार के बीच एकता वार्ता का सिलसिला तेज हुआ। कामरेड कोटेश्वरलु की अगुवाई में किए गए प्रयासों के फलस्वरूप पश्चिम बंगाल में मौजूद कई व्यक्ति और ग्रुप 1995 तक ही भाकपा (मा–ले) (पीपुल्सवार) में एकजुट होने लगे थे। पार्टी की लाइन पर दृढ़ता से खड़े होकर उन्होंने केन्द्रीय कमेटी की ओर से विभिन्न क्रांतिकारी ग्रुपों और राष्ट्रीयता संघर्ष के संगठनों से राजनीतिक बहसें चलाईं ताकि उनके साथ सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध बढ़ें। इस तरह हमारी पार्टी की राजनीति से कई लोगों को पार्टी में आकर्षित करने में वे सफल रहे। विभिन्न शक्तियों व सस्थाओं के बीच वैचारिक, व्यावहारिक और सांगठनिक एकता हासिल करने में एकता, संघर्ष और उन्नत स्तर की एकता की पक्रिया को अपनाते हुए कामरेड कोटेश्वरलु ने जो प्रयास किए उससे क्रांतिकारियों की एकता का रास्ता साफ हो गया।

इस सिलसिले में पुरानी पार्टी यूनिटी के साथ एकता की प्रक्रिया शुरू हो गई। कामरेडाना माहौल में लगभग चार सालों तक चली वार्ता के बाद अगस्त

उसी समय पश्चिम बंगाल में, जहां आंदोलन को धक्का लग चुका था, जनता की आकांक्षाओं को मूर्त रूप देने के लिए कामरेड किशनजी ने अपने सांगठनिक कौशल का परिचय देते हुए दृढ़ संकल्प से काम किया। वे एक भरोसेमंद नेता थे जो किसी भी मोर्चे में कार्य करके सकारात्मक नतीजे हासिल कर सकते थे। उनके प्रयासों के फलस्वरूप कोलकाता महानगर में फिर से क्रांति की हवाएं बहने लगीं। प्रेसिडेंसी कालेज और जाधवपुर विश्वविद्यालय में क्रांतिकारी राजनीति फिर एक बार हावी होने लगी। नक्सलबाड़ी के बाद से नव संशोधनवादी सीपीएम की सत्ता के गढ़ में बदल चुके पश्चिम बंगाल में कामरेड किशनजी ने पार्टी द्वारा सौम्पे गए कार्यभार को कंधों पर लेकर क्रांतिकारी आंदोलन का पुनरनिर्माण करने की तीव्र कोशिशें कीं। पश्चिम बंगाल को लेकर सीपीएम और उसके दलाल कई मिथकों को प्रचार में रखे हुए थे कि वहां पर 'मार्क्सवादियों' ने भूमि सुधारों को इस हद तक लागू किया जितना कि देश के किसी भी राज्य में नहीं किया गया और वहां जनता को 'स्वर्ग' सा माहौल मिला हुआ है। लेकिन सारी दुनिया को यह मालूम होने में देर नहीं लगी कि यह सब महज ढोंग है। क्रांतिकारी क्रियाकलापों के तेज होने से सीपीएम के अंदर खलबली मच गई कि उनकी सत्ता के अंत की शुरूआत हो चुकी है और नक्सलबाड़ी की विरासत को जारी रखकर यह आंदोलन उनकी सत्ता की चूलें हिला सकता है। तीन दशकों से ज्यादा समय से जन विरोधी शासन चलाने वाले 'मार्क्सवादियों' का लाल रंग क्रांतिकारी जन संघर्षों के झोंके से फीका होने लगा। इस क्रम में कामरेड किशन जी ने काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सामाजिक फासीवादी शासन, जन विरोधी व कार्पोरेट अनुकूल नीतियों और जनता पर चलाए गए घोर हिंसा व दमनचक्र के कारण सीपीएम जनता के तीव्र गुस्से व घृणा का शिकार बन गई। इसी का नतीजा है कि मई 2011 को हुए चुनावों में उसे घोर पराजय का मुंह देखना पड़ा।

क्रांतिकारी शक्तियों को एकजुट करने के लिए पार्टी शुरू से ही प्रयासरत रही। 1980 के बाद के अपने व्यवहार की समीक्षा 1995 में आयोजित पुरानी पीपुल्सवार के अखिल भारतीय विशेष अधिवेशन में गहराई से की गई। इस समीक्षा के आधार पर कामरेड किशनजी ने विभिन्न क्रांतिकारी ग्रुपों और



किसान व छात्र गुरिल्लों ने यादगिरी रेड्डी (काज़ीपेट एसआई), बुच्चिरेड्डी (पेद्दापल्ली डीएसपी), कोमल रेड्डी (हवलदार), लक्ष्मण राव (कागजनगर एसआई) जैसे क्रूर पुलिस अधिकारियों को अपने देशी हथियारों से ही मार गिराया। इससे भयभीत होकर दुश्मन ने मानवाधिकार संगठनों के नेताओं की कायराना हत्याएं कीं। वरंगल में डाक्टर रामनाथम् और करीमनगर में जापा लक्ष्मारेड्डी की पुलिस ने हत्या कर दी। जगित्याल में वकील गोपि राजन्ना को हिंदू धार्मिक उन्मादियों ने कत्ल कर दिया। इन हत्याओं के जरिए राजसत्ता ने अपना फासीवादी चेहरा उजागर किया। पूरी दुनिया को मालूम हो गया कि उसके लोकतंत्र और संविधान कितने खोखले हैं।

राजसत्ता द्वारा जारी हत्याओं के सिलसिले से क्रांतिकारी आंदोलन का विस्तार नहीं थमा। वह और ज्यादा संगठित होने लगा। 1985 में 'अखिल भारतीय क्रांतिकारी छात्र संघ' की स्थापना हुई। कई राज्यों में गठित होकर काम करने वाले क्रांतिकारी छात्र संगठनों ने एकजुट होकर एक देशव्यापी संघ का निर्माण किया जिससे मजबूत छात्र आंदोलन की नींव डाली गई। कामरेड प्रह्लाद ने न सिर्फ इस संघ के निर्माण में अहम भूमिका निभाई, बल्कि इसके प्रथम अधिवेशन का नजदीक से मार्गदर्शन किया।

'दुश्मन के अघोषित युद्ध को आत्मरक्षात्मक युद्ध के जरिए हरा दें...' के नाम से आंध्रप्रदेश राज्य कमेटी ने एक सरकुलर जारी किया जिसकी रोशनी में कुछ अहम फैसले लिए गए। दुश्मन के भारी दमनचक्र को देखते हुए राज्य कमेटी की संख्या को घटाकर पांच रखना, आत्मगत शक्तियों की रक्षा करते हुए उल्लेखनीय संख्या में कार्यकर्ताओं को दण्डकारण्य भेजना, देश के दूसरे राज्यों में, खासकर औद्योगिक शहरों में नई क्रांतिकारी ताकतों को तैनात करना आदि उन फैसलों में प्रमुख थे। उस समय पार्टी के फैसले के मुताबिक कामरेड कोटन्ना दण्डकारण्य आंदोलन का मार्गदर्शन करने की जिम्मेदारी उठाकर जंगल में आ गए। इस तरह वे सशस्त्र गुरिल्ला बलों के बीच, जनयुद्ध के प्रत्यक्ष मोर्चे में पहुंच गए। निज़ाम के खिलाफ कोमुरम भीम के साथ मिलकर लड़ने वाले आदिवासी वीर योद्धा 'रामजी गोण्ड' के नाम को अपनाते हुए उन्होंने अपना नाम 'रामजी' रखा। तबसे दण्डकारण्य की जनता और कैडरों में वे 'रामजी दादा' के नाम से लोकप्रिय हो गए और उनके दिलों में सदा के लिए बस गए।

## जनयुद्ध के सेनानी के रूप में प्रेरणादायी गुरिल्ला जीवन

कामरेड कोटेश्वरलु ने जनयुद्ध के नियमों, गुरिल्ला युद्ध नीति, जनसेना के निर्माण की आवश्यकता पर; चीन, वियत्नाम और रूस की क्रांतियों के अनुभवों; लाल सेना के अनुभवों, विश्व युद्धों के अनुभवों; सुन–ज़ू व क्लासविट्ज़ आदि सैनिक विशेषज्ञों की रचनाओं; विभिन्न देशों के सैन्य मैनुअलों का गहराई से व ध्यानपूर्वक अध्ययन किया। खुद पढ़ने के साथ–साथ पार्टी कैडरों से पढ़वाने पर भी उनका ध्यान रहता था। यह उनकी सामूहिकता की भावना का एक उदाहरण है। भारत के इतिहास में हुए कई युद्धों, सिखों के लड़ाकू अनुभवों और तमिल चीतों के गुरिल्ला युद्ध के अनुभवों का उन्होंने गहरी समझ के साथ अध्ययन किया। उन अनुभवों की माओवादी सैनिक सिद्धांतों की रोशनी में समीक्षा करते हुए लेख लिखकर कैडरों तक पहुंचाने में उनका खासा योगदान रहा। अपनी सैन्य क्षमताओं को बढ़ाने के लिए उन्होंने निरंतर अभ्यास किया।

1981 के बरसात के मौसम में आयोजित पार्टी के पहले सैन्य प्रशिक्षण शिविर में कामरेड रामजी ने भाग लिया था। करीमनगर–वरंगल जिलों के सीमांत के वन क्षेत्र में आयोजित उस शिविर में उन्होंने प्रशिक्षकों के बताए हुए सभी विषयों को दृढ़ता से सीख लिया। उस शिविर में दुर्घटनावश हथगोला फट जाने से बेल्लमपल्ली के मजूदरों का लाड़ला और रीजनल इंजिनीरिंग कालेज का पूर्व छात्र कामरेड गज्जेला गंगाराम शहीद हो गया। जंगल क्षेत्र में विस्तार के पहले प्रयास के दौरान कामरेड पेद्दि शंकर और युद्ध प्रशिक्षण के पहले शिविर में कामरेड गज्जेला गंगाराम की शहादतों को कामरेड रामजी ने कभी नहीं भुलाया। उन घटनाओं से सबक लेकर गुरिल्ला बलों को शिक्षित करने पर उन्होंने ध्यान दिया। 1981 से 1989 तक दण्डकारण्य में आयोजित तमाम फौजी प्रशिक्षण शिविरों में कामरेड रामजी ने एक छात्र के रूप में भाग लेकर सैन्य मोर्चे में निपुणता हासिल की। 1982 में डिवीजन वार आयोजित सैनिक प्रशिक्षण शिविरों में उन्होंने राजनीतिक शिक्षक के रूप में भाग लेकर जनयुद्ध की शिक्षा दी। मुख्य रूप से गुरिल्ला युद्ध की कार्यनीति सिखाई। 'रोशनी गुरिल्लों का रात का दुश्मन है' – सावधानियां बरतने के हिसाब से बताते हुए उनके इस कथन को कैडर आज भी याद करते हैं। 1983 में आयोजित केन्द्रीय सैनिक प्रशिक्षण शिविर में उन्होंने एक छात्र के अलावा



कमेटी द्वारा गठित प्रतिनिधिमण्डल के सदस्य के रूप में उन्होंने अपनी जिम्मेदारियां दृढ़ता से पूरी कीं। वामपंथी दुस्साहसवाद या दक्षिणपंथी अवसरवाद का शिकार होकर छोटे–बड़े कई गुटों में बंट चुकी शक्तियों के बीच राजनीतिक एकता लाने के लिए उन्होंने उनके राजनीतिक व सैद्धांतिक मतभेदों का गहरे व व्यापक रूप से अध्ययन किया। उन्हें अच्छी तरह अवगत कर लिया।

1970 के दशक के मध्य तक भाकपा (मा–ले) द्वारा अपनाई गई एकता की कोशिशों का नतीजा नहीं निकलने से पार्टी इस निर्णय पर पहुंच गई थी कि पार्टी द्वारा बनाई गई रणनीति–कार्यनीति और 'अतीत का मूल्यांकन करते हुए सशस्त्र संघर्ष के रास्ते पर आगे बढ़ेंगे' (आत्मालोचना रिपोर्ट) के आधार पर पहले क्रांतिकारी जन आंदोलन का निर्माण किया जाए। पार्टी का निश्चित मानना रहा कि इस अनुभव पर निर्भर होकर एकता के प्रयासों को फिर से जारी रखने से ही सच्चे क्रांतिकारियों के बीच उसूली एकता कायम करने का आधार बन सकता है। करीमनगर और आदिलाबाद जिलों में जन आंदोलन का निर्माण करने में पार्टी द्वारा हासिल कामयाबियों ने मानों इतिहास की गति को ही बदल दिया। उसे उन्नत स्तर के आंदोलन में विकसित करने की कोशिशों के अंतर्गत ही दण्डकारण्य में आंदोलन खड़ा हुआ। 1980 के दशक के आखिर तक उत्तर तेलंगाना और दण्डकारण्य दोनों गुरिल्ला क्षेत्रों के रूप में उभरे थे। इस समृद्ध अनुभव के आधार पर, उनके प्रतिनिधि व नेता के रूप में कामरेड किशनजी ने देश भर में पार्टी को एकजुट करने की कोशिशें जारी रखीं।

एआईसीसीसीआर (अखिल भारतीय कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों की समन्वय समिति) के गठन के समय से ही स्वतंत्र रूप में रहकर एक व्यापक इलाके में क्रांतिकारी आंदोलन का निर्माण कर चुके माओवादी कम्युनिस्ट केन्द्र (एमसीसी) और पुरानी भाकपा (मा–ले) (पीपुल्सवार) के बीच 1980 के दशक की शुरूआत से जारी एकता–वार्ता को अंजाम तक पहुंचाकर इन दोनों धाराओं को एक महाधारा में बदलने की जरूरत को उक्त दोनों ही पार्टियों ने अत्यधिक महत्व दिया। उसके पहले से ही भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मा–ले) के अंतर्गत रही पार्टी यूनिटी के साथ एकता हासिल करने की पुरानी पीपुल्सवार पार्टी की कोशिश जारी रही।

हथियारबंद करने पर जोर दिया गया। जनयुद्ध को सभी पहलुओं में विकसित कर आधार इलाके के निर्माण के लक्ष्य से आंदोलन को आगे बढ़ाने का निर्णय लिया गया। इसमें कामरेड रामजी का सक्रिय योगदान रहा। वे इस बारे में हमेशा सोचते थे और पार्टी कमेटियों व नेतृत्वकारी कैडरों को निरंतर सोचने व समुचित निर्णय लेने हेतु प्रोत्साहित करते थे। गुरिल्ला जोनों में जनयुद्ध की जरूरतों को पूरा करने के लिए हथियारों की तैयारी की विशेष यूनिटें बनाने पर उन्होंने शुरू से ही विशेष ध्यान दिया।

पिछले 30 सालों में दण्डकारण्य के आंदोलन में आए हरेक मोड़ पर कामरेड रामजी अपनी छाप छोड़ गए। वहां के आंदोलन के विकास में उनका योगदान अविस्मरणीय था। पहले जगित्याल और बाद में दण्डकारण्य में प्रत्यक्ष रूप से काम करके उन्होंने जो अनुभव हासिल किए उन्हें जंगल महल इलाके में लागू करते हुए वैकल्पिक जन सत्ता की व्यवस्था की नींव रखने की कोशिश उन्होंने की। 10 फरवरी 2011 के दिन दण्डकारण्य में पार्टी द्वारा आयोजित दण्डकारण्य आंदोलन की तीसवीं वर्षगांठ के मौके पर भाषण देते हुए उन्होंने दुनिया भर में विकसित हो रहे क्रांतिकारी हालात व हमारी नेतृत्वकारी शक्तियों में हो रही क्षति के परिप्रेक्ष्य में दण्डकारण्य आंदोलन के सामने मौजूद चुनौतियों के बारे में विस्तार से बताया। दण्डकारण्य में पार्टी कतारों के लिए यही उनका आखिरी संदेश था।

## एक आदर्श कम्युनिस्ट जिन्होंने देशव्यापी क्रांतिकारी शक्तियों की एकता पर जोर लगाया

1993 के आखिर में कामरेड रामजी ने केन्द्रीय आर्गनाइज़िंग कमेटी (सीओसी) के सदस्य के रूप में देश के उत्तरी व पूर्वी इलाकों में आंदोलन के विस्तार की जिम्मेदारियां उठाईं। पश्चिम बंगाल उनका प्रधान कार्यक्षेत्र बन गया। वहां पर वे 'किशनजी' के नाम से परिचित हो गए। वहां पर एक साथ उन्होंने कई जिम्मेदारियां संभालीं। महान नक्सलबाड़ी विद्रोह की अस्थाई पराजय के बाद कोलकाता महानगर समेत नदिया, मुर्शीदाबाद, 24 परगणा, पूर्वी व पश्चिमी मेदिनीपुर आदि जिलों में आंदोलन का पुनरनिर्माण करने का महती कार्यभार उन पर पार्टी ने सौंप दिया। नक्सलबाड़ी संघर्ष के पीछे हटने के बाद बिखर चुकी पार्टी को फिर से एकजुट करने के काम के लिए केन्द्रीय



शिक्षक के रूप में भी भाग लिया जहां उन्होंने राज्य कमेटी सचिव के रूप में गुरिल्ला बलों को बेहतर प्रशिक्षण देने की कोशिश की। उसके बाद आंध्रप्रदेश राज्य कमेटी और दण्डकारण्य फारेस्ट कमेटी की पहलकदमी पर 1987 और 1989 में आयोजित सैनिक प्रशिक्षण शिविर जन सेना के विकासक्रम में अहम बिंदु थे। माओवादी बन चुके श्रीलंका के तमिल लड़ाकों ने सर्वहारा अंतरराष्ट्रीयवाद की उच्च भावना से इन शिविरों में प्रशिक्षकों के रूप में भाग लेकर उच्च स्तर का प्रशिक्षण दिया। गुरिल्लों के लिए आवश्यक सैन्य तकनीक सिखाई। कामरेड रामजी ने इन सभी को दृढ़ संकल्प के साथ सीख लिया। इस अनुभव के आधार पर उन्होंने जंगल महल में एक नेता व प्रशिक्षक के रूप में गुरिल्लों को प्रशिक्षित किया जिससे शत्रु बलों पर साहसिक हमले कर कामयाबियां हासिल करने में मदद मिली। 15 फरवरी 2010 को सिल्दा में हमला कर ईस्टर्न फ्रांटियर रायफल्स के 24 जवानों को मार गिराने की कार्रवाई को उनकी सैन्य प्रतिभा का परिचायक कहा जा सकता है। सैन्य प्रशिक्षण शिविरों में कामरेड रामजी गुरिल्ला साथियों से कहा करते थे, ''डटकर खाना और डटकर काम करना''। यह उस जमाने के गुरिल्ला कमाण्डरों की जुबान पर आज भी एक प्रचलित मुहावरा है।

सैन्य अनुशासन का पालन करने में कामरेड रामजी आगे रहते थे। अपनी शारीरक दृढ़ता को बढ़ाने में वे जितना महत्व देते थे, उतना ही जोर अनुशासन के पालन पर। हमेशा हथियार को साथ में रखने से लेकर ग्राउण्ड में हर अभ्यास को एक सुशिक्षित सैन्य कमाण्डर की तरह किया करते थे। गुरिल्ला दस्तों के अनुभवों का विश्लेषण कर दस्तों के लिए स्थाई आदेश (स्टैंडिंग आर्डर्स) तैयार करने में कामरेड रामजी की भूमिका महत्वपूर्ण रही। चाहे पूरब की पर्वतमाला हो या फिर माड़ की पहाड़ियां, कहीं पर भी वे बड़ी आसानी से चढ़ाई करते थे। अपने साथियों को उत्साहित करते हुए उनकी युवा शक्ति को उभारने के लिए दौड़ में, चलने में और बोझा उठाने में उनसे होड़ लगाया करते थे। वे अक्सर कहा करते थे कि गुरिल्लों को किसी भी ध रातल में कितनी भी दूर हो अपना किट और हथियार समेत 20–25 किलो का वजन लेकर चलना चाहिए। वे खुद ऐसा करते भी थे।

1999 में गुरिल्ला सेना के निर्माण के बारे में पार्टी की केन्द्रीय कमेटी ने व्यापक रूप से विचार–विमर्श किया। 1980 से 1999 तक निर्मित हुए गुरिल्ला

दस्तों व प्लाटूनों के अनुभवों की समीक्षा की। जनयुद्ध में हासिल प्रगति और आधार इलाके के लक्ष्य के बारे में केन्द्रीय कमेटी ने गहराई से चर्चा की। उन तमाम बहसों का नतीजा ही था 2 दिसम्बर 2000 को जन मुक्ति छापामार सेना का आविर्भाव। इसमें कामरेड रामजी की सक्रिय भूमिका रही। पीएलजीए की स्थापना के अवसर पर वे स्वयं दण्डकारण्य में मौजूद थे जहां उन्होंने एक क्रांतिकारी माहौल में उस प्रक्रिया की अगुवाई की थी। उस मौके पर उपस्थित गुरिल्लों को उन्होंने केन्द्रीय कमेटी का संदेश बेहतरीन ढंग से समझाया ताकि वे जनसेना के महत्व को समझ सकें। दिसम्बर 2010 में आयोजित पीएलजीए की दसवीं वर्षगांठ के अवसर भी उन्होंने जोशीला भाषण दिया जिसमें कांग्रेस द्वारा निर्देशित केन्द्रीय कार्यभार को पूरा करने के लिए सभी पहलुओं में पीएलजीए को ताकतवर बनाने की जरूरत पर जोर दिया। उनके शब्दों में–

''बिना मजबूत जन संघर्षों के निर्माण के और राजनीतिक तौर पर जनता को उत्साहित कर पीएलजीए में बड़े पैमाने पर भर्ती किए बगैर हम जनसेना को मजबूत नहीं बना सकते। साथ ही साथ, जनसेना के सहयोग के बिना जन संघर्षों को हम लम्बे समय तक मजबूत संघर्षों के रूप में जारी नहीं रख सकते।.... दुश्मन हमें एक जगह पर घेराव करना चाहता है तो हम उसका दूसरे इलाके में घेराव करना चाहिए। कई नए इलाकों में संघर्षों का निर्माण करना चाहिए। देशव्यापी संघर्षों में दुश्मन की घेराबंदी करनी चाहिए...

''.... जहां पर केवल जन संघर्ष होंगे और पीएलजीए नहीं होगी वहां पर पीएलजीए के निर्माण का प्रयास करना चाहिए। जहां पर जन संघर्ष नहीं है वहां पर पीएलजीए के सहयोग से उसका निर्माण करना चाहिए।''

## दण्डकारण्य आंदोलन के विकास में कामरेड रामजी का योगदान

कामरेड रामजी, जोकि 1986 से दण्डकारण्य आंदोलन का मार्गदर्शन कर रहे थे, को फरवरी 1987 में आयोजित दण्डकारण्य के पहले अधिवेशन में फारेस्ट कमेटी सदस्य के रूप में चुन लिया गया। 1987–93 के बीच उन्होंने फारेस्ट कमेटी सदस्य और सचिवालय सदस्य रहते हुए दण्डकारण्य आंदोलन के विकास में भरपूर योगदान दिया। मुख्य रूप से गढ़चिरोली डिवीजन में अपने काम को केन्द्रित करते हुए उन्होंने आदिलाबाद से 'मन्यम' की



पर्वतमाला तक फैले हुए सभी डिवीजनों के आंदोलनों से अपना रिश्ता जोड़े रखा। 1989 में मध्य भारत में बालाघाट डिवीजन के विकास के लिए विशेष प्रयास किया। जरूरतों के हिसाब से दूरगामी नजरिए से आंदोलन का विस्तार करने पर हमेशा उनका जोर रहता था। 1993 के आखिर में वे केन्द्रीय सांगठनिक कमेटी (सी.ओ.सी.)सीओसी सदस्य की हैसियत से उत्तर भारत के राज्यों, खासकर पश्चिम बंगाल में क्रांतिकारी आंदोलन के विस्तार की जिम्मेदारी लेकर चले जाने के बाद भी दण्डकारण्य के आंदोलन से जीवंत संपर्क में बने रहे। वहां पर घटने वाली युद्ध की हर कार्रवाई पर तथा राजनीतिक व सांगठनिक बदलावों पर लगातार नजर रखते हुए उनका ध्‍यानपूर्वक अध्ययन करते थे।

दण्डकारण्य में आंदोलन की स्थिति के अनुसार कमेटियों में चर्चा कर सही कार्यनीतियों को अपनाने में उन्होंने प्रमुख भूमिका निभाई। वहां पर शहरी मोर्चे में कामकाज को बढ़ाने के लिए संगठक पद्धति को लागू करने पर, चंद्रपुर, जगदलपुर, रायपुर, राजनांदगांव से लेकर सिरोंचा, आल्लापल्ली तक संगठकों को तैनात करने पर कमेटियों में चर्चा करके अमल करने पर उन्होंने जोर दिया। फारेस्ट कमेटी के फैसले के अनुसार जन संगठनों को शक्तिशाली ढंग से चलाने के लिए संगठक पद्धति लागू की गई थी जिसमें रामजी की पहलकदमी अहम थी। जंगलों और मैदानी/शहरी इलाकों के आंदोलनों के बीच तालमेल बैठाने के लिए समुचित सांगठनिक स्वरूपों को पेश करने में भी उनका प्रयास रहा। सैनिक मोर्चे को विशेष रूप से विकसित करने की दृष्टि से 1993 में विशेष मिलिटरी दस्तों तथा 1995 में प्लाटून का निर्माण कर जनसेना की नींव रखने में कामरेड रामजी ने पहले एफसी सदस्य और बाद में सीओसी सदस्य के रूप में पहलकदमी दिखाई। 1994 में ग्राम राज्य कमेटी (अब क्रांतिकारी जन कमेटी/जनताना सरकार) के निर्माण के बारे में केन्द्रीय कमेटी द्वारा लिए गए प्रस्तावों के पीछे तथा उसे दण्डकारण्य में लागू करने में कामरेड रामजी ने महत्वपूर्ण सैद्धांतिक व राजनीतिक योगदान दिया।

दण्डकारण्य के आंदोलन के अनुभवों का सीसी और एसजेडसी ने विश्लेषण और संश्लेषण कर वहां गुरिल्ला युद्ध को आगे बढ़ाने और दुश्मन पर कार्यनीतिक प्रत्याक्रमण तेज करने का फैसला लिया। दुश्मन के बलों का बड़े पैमाने पर सफाया कर हथियार छीनने तथा पीएलजीए व जन मिलिशिया को